ईसीएल से नेताजी लाल... | अब क्या करेंगे धर्मपाल... | आपसे यह उम्मीद नहीं थी नीतीश जी...

मूल्य : ₹ 25
अगस्त, 2018

समदिया मिथिला

राजनीति गुरु

साजिश के शिकार संजीव !

हमलावर अर्जुन

वीर शिबू सोरेन जिंदाबाद... झारखंड मुक्ति मोर्चा जिंदाबाद... हेमंत सोरेन जिंदाबाद...

स्वतंत्रता दिवस

के मौके पर पूरे देश की जनता को

हार्दिक शुभकामनाएं.

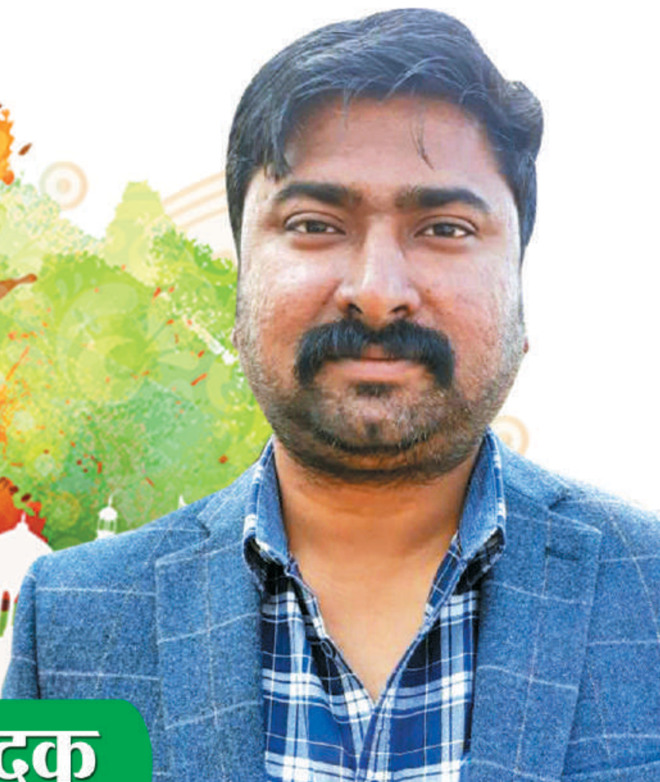

निवेदक

विजय हांसदा, सांसद, राजमहल लोकसभा क्षेत्र

मो.-9939124810

सबका साथ,सबका विकास

स्वतंत्रता दिवस

के अवसर पर दुमका विधानसभा क्षेत्र के
लोगों और समस्त झारखंड की जनता को

हार्दिक शुभकामनाएं.

मेरा मकसद, सबके चेहरे
पर हो मुस्कान

निवेदक

डॉ. लुईस मरांडी

मंत्री, कल्याण (अल्पसंख्यक कल्याण सहित) महिला बाल
विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग, झारखंड सरकार

स्वतंत्रता दिवस
के मौके पर पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र के
निवासियों सहित पूरे देश की जनता को
हार्दिक शुभकामनाएं.
निवेदक
अकील अख्तर, पूर्व विधायक, पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र

समदिया मिथिला
राजनीति गुरु
सियासत जारी है...
अगस्त, 2018
www.rajneetiguru.com

संपादक
राघवेंद्र

कार्यकारी संपादक
उदय कुमार चौहान

संपादक बिहार
प्रणव

राजनीतिक संपादक
शैलेश तिवारी

समन्वय संपादक
मनोज कुमार सिंह

प्रबंध संपादक
मुकेश मिश्रा

सहायक संपादक
कुणाल कुमार

ब्यूरो प्रमुख
मृत्युंजय श्रीवास्तव
रंजीत झा (संथालपरगना)
उमेश हेलीवाल (धनबाद कोयलांचल)

ऑनलाइन एडिटर
राजीव कुमार

प्रमुख संवाददाता
श्रीधर वत्स, कुमार अमित

सीनियर रिपोर्टर
रतन कुमार, कौशलेंद्र, कुमुद रंजन

क्रियेटिव हेड
सुभाष

असिस्टेंट मैनेजर (मार्केटिंग)
पंकज मिश्रा (पटना)

इस अंक के कंटेंट से संबंधित प्रतिक्रिया और अपने सुझाव इमेल के जरिये भेज सकते हैं। आपके बहुमूल्य सुझाव का इंतजार रहेगा।
contact@rajneetiguru.com

बिहार कार्यालय
जी-603, मुंडेश्वरी इनक्लेव,
आशियाना रोड, पटना

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक-प्रकाशक
राघवेंद्र द्वारा बाबा प्रिंटर्स रामनगरी, आशियाना, पटना से प्रकाशित एवं मुद्रित

सभी कानूनी मामले पटना के सक्षम न्यायालय द्वारा निपटाये जायेंगे।

आरएनआई नंबर BIHMAI/2010/33053

आजादी का सीजन है...

रा 15 अगस्त के बहाने आजाद भारत के प्रति अपनी दीवानगी जाहिर करने का मौसम भी है और तकाजा भी। सबलोग आजादी के तराने गा रहे हैं। बड़ी–बड़ी बातों की फसल बोयी जा रही है। कसमें–वादे ऐसे ऐसे कि क्या कहना। देश भक्ति के इस माहौल में हर रोज ऐसे डरावने किस्से सामने आ रहे हैं कि समाज अलग–अलग द्वीपों में बंटता सा दिख रहा है। काश! आजादी के नायकों से हमने सचमुच का सबक लिया होता। काश! हमने सर्वधर्म सद्भाव और इंसानियत का ककहरा भी अपने नायकों की कहानियों से समझा होता।

बहरहाल, समदिया मिथिला राजनीति गुरु का यह अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें बेहद खुशी हो रही है। समसामयिक राजनीतिक घटनाओं का पिटारा लेकर एक बार फिर आपके सामने हैं हम।

झरिया के युवा विधायक संजीव सिंह सलाखों के भीतर हैं। इस लोकप्रिय भाजपा विधायक को जिस आरोप में जेल यात्रा करनी पड़ी है, उसपर सवाल खड़े हो रहे हैं। धनबाद का एक बड़ा तबका यह मानता है कि संजीव सिंह अपनों के साजिश के शिकार हुए हैं। पुलिस की जांच और एफआइआर की अलग–अलग दिशाएं बहुत कुछ कह रही हैं। हमने इसी अंतरविरोध को सामने लाने की कोशिश की है।

अर्जुन मुंडा के हाल के बयान बहुत कुछ कह रहे हैं, जिस तरह से उन्हें हासिए पर रखने की कोशिश हुई, उससे आहत अर्जुन ने जब बयानों के तीर चलाये तो पार्टी के अंदर बहुत से लोग घायल हुए। हमने यह समझने की कोशिश की है कि आखिर माजरा क्या है!

बिहार की राजनीति में मुजफ्फरपुर कांड ने सिस्टम को बेपर्द किया है। समाज सेवा की दुकान चलाने वाली संस्थाएं कुकर्मों के किस नरक में पहुंच गयी है, यह साफ हो रहा है। समाज कल्याण मंत्री ने इस्तीफा जरूर दिया है लेकिन कई धुंध पर से परत हटना अभी भी बाकी है। मुजफ्फरपुर कांड के अलावा भी बिहार की कई सियासी कहानियां हम आपके सामने रख रहे हैं।

झारखंड में ईसीएल का काला कोयला कैसे अपराध राजनीति के गठजोड़ की वजह से नेताओं को लाल बना रहा है, हमने इसे भी समझने की कोशिश की है। सावन का महीना है, देवघर में भक्तों की भीड़ है। सदाशिव के दर्शन करने पहुंचे भक्त सुविधाओं के तमाम सरकारी दावों के बाद भी परेशान हैं। हमने वह परेशानी भी देखने समझने की कोशिश की है। और अंत में ... आपसे यही गुजारिश है कि हमेशा की तरह अपने सुझाव भेजें ताकि हम कंटेंट में और सुधार कर पायें।

धन्यवाद

आपका
राघवेंद्र

समदिया मिथिला

राजनीति गुरु

सियासत जारी है...

इस अंक में

खामोश रहते-रहते आखिर फट ही पड़े **अर्जुन**

सियासी कथा पेज >> 7-9

सियासत नहीं सुदेश को ही खत्म कर देने की **साजिश**

साजिश पेज >> 12-13

मानसून सत्र

20-23

कवर स्टोरी

24-27

मुजफ्फरपुर कांड

32-34

क्रशर कथा

39-40

41 स्वामी अग्निवेश की पिटाई से कहीं संथाल में घायल ना हो जाये भाजपा

संथाल राजनीति

51 शिव के नगर में झमेलों की **डगर**

बोल बम

खामोश रहते-रहते आखिर फट ही पड़े अर्जुन

अर्जुन मुंडा झारखंड की राजनीति के एक ऐसे सितारे हैं जिन्हें बुझा हुआ समझना बड़ी भूल होगी। उनकी खामोशी को कुछ लोगों ने उनकी मजबूरी समझ लिया। जबकि देखा जाय तो उनकी खामोशी भी एक सियासी सोच का हिस्सा थी।

झारखंडी राजनीति के मिजाज़ को अच्छी तरह समझने वाले अर्जुन मुंडा ने भी भाजपा नेतृत्व के सामने इशारों-इशारों में बता ही दिया कि उनकी उपेक्षा कर झारखण्ड फतह का सपना भूल जाईये। इसीलिए राष्ट्रीय अध्यक्ष के अर्जुन मुंडा ने संथाल विद्रोह के अमर नायक तिलका मांझी की कहानी भी सुनायी।

अर्जुन मुंडा जी हमारी पार्टी के सीनियर नेता हैं, वो कहीं और नहीं जाने वाले। उन्हें सरकार के स्तर पर लगातार नजरंदाज किया जाता रहा तो आखिर वो कितना चुप रहते ! संघ और संगठन के हर बड़े नेता के संपर्क में रहे अर्जुन मुंडा को जब लगा कि सरकार जानबूझकर उन्हें आइसोलेट करना चाहती है तो उन्होंने अपने सबसे अचूक हथियार मीडिया का इस्तेमाल किया। और वो क्या कर सकते थे ! अगर अब भी वो अपनी बात नहीं कहते तो आनेवाले समय में उनके समर्थक यह पूछेंगे न कि वक्त पर उन्होंने भी तो कुछ नहीं कहा।

यह कहते हुए जब झारखण्ड भाजपा के एक बड़े नेता ने मुंडा के मीडिया में जाने का बचाव किया तो उनके चेहरे पर असमंजस था। यही असमंजस प्रदेश भाजपा के हर छोटे- बड़े चेहरे पर तब भी दिखा जब 11 जुलाई को अपने रांची दौरे पर आये भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने पार्टी पदाधिकारियों की मीटिंग में अर्जुन की ओर इशारा करते हुए साफ - साफ कहा कि रघुवर सरकार तो अर्जुन मुंडा जी के बनाये रोड मैप पर ही चल रही है। तब बहुत से रघुवर समर्थकों को लग गया कि शायद राष्ट्रीय अध्यक्ष संतुलन बनाकर चलने की बात कर रहे हैं।

यह सधे इशारे में रघुवर दास को एक संकेत भी था कि पानी सर के ऊपर से मत बहने दीजिये। शाह को तब तक अर्जुन मुंडा की नाराजगी के बारे में पता चल चुका था, इसलिए उन्होंने अपने 11 जुलाई के झारखण्ड दौरे में एअरपोर्ट से लेकर वापसी तक हमेशा अर्जुन मुंडा को अपने साथ रखा। जब - जब रघुवर, शाह के साथ थे अर्जुन मुंडा भी उनके साथ थे। 12 जुलाई को मोरहाबादी के राजकीय अतिथिशाला से निकलने से पहले आजसू अध्यक्ष सुदेश महतो, शाह से मिलने गए तब भी अर्जुन मुंडा उनके साथ थे।

अमित शाह ने यह दिखाने की पूरी कोशिश की कि भाजपा के अंदर सब कुछ ठीक है। इसलिए इस बार उन्होंने संगठन को कोई नया टास्क नहीं दिया, ज्यादा वक्त समन्वय की बाजीगरी साधने में लगाया।

झारखंडी राजनीति के मिजाज़ को अच्छी तरह समझने वाले अर्जुन मुंडा ने भी भाजपा नेतृत्व के सामने इशारों-इशारों में बता ही दिया कि उनकी उपेक्षा कर झारखण्ड फतह का सपना भूल जाईये।

राष्ट्रीय अध्यक्ष के सामने बोलते हुए अर्जुन मुंडा ने संथाल विद्रोह के अमर नायक तिलका मांझी की कहानी सुनाते हुए अपने अंदाज़ में यह बयां भी कर दिया कि जब किसी आदिवासी के आत्मसम्मान को ठेस लगती है तो फिर वो किसी की नहीं सुनता। यह संवाद दरअसल उस सरकार के मुखिया को करारा जवाब था, जो आहिस्ता आहिस्ता पार्टी को आदिवासी विरोध के ऐसे मुहाने पर ला चुके हैं, जहां भाजपा के आदिवासी विधायक और सांसद भी अपने को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं।

आखिर क्या है अर्जुन मुंडा की ताकत ! क्या वो प्रदेश की सियासत में अप्रासंगिक हो चुके हैं या अभी भी इनकी सियासी ताकत बची हुई है। राजनीति के बाज़ार में भाजपा ही नहीं विपक्ष के नेता भी मुंडा को मजाक में भूमिहार कहते हैं। यानि वो सबके हैं, चाहे मुंडा ने अपने वक्त किसी का काम किया हो अथवा नहीं, वो सबसे अच्छी तरह से संवाद करते रहे हैं। सारे दल में उनके मित्र हैं, शुभ चिन्तक हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी अपने ऊपर नियंत्रण रखना अर्जुन मुंडा की सबसे बड़ी सियासी ताकत है।

लेकिन तकरीबन 45 महीने की खामोशी के बाद उनके प्रासंगिक होने पर ही जब सवाल उठने लगे तो उन्होंने कई मुद्दों पर सरकार को आड़े हाथों लिया। आदिवासियों की नाराजगी के लिए सरकार के कदमों को जिम्मेवार ठहराया, भूमि अधिग्रहण नीति में संशोधन पर खुलकर अपनी बात कही और सरकार के कामकाज पर सवाल उठा दिया। ऐसा करके प्रकारांतर से वो अगले चुनाव के लिए तैयार भी कर रहे हैं, जब आदिवासी किसी भी भाजपा नेता की नहीं सुनेंगे, तब मुंडा एकमात्र अपवाद हो सकते हैं। अपने व्यापक जनसमर्थन के चलते वो स्पष्ट बहुमत नहीं होने की स्थिति में भाजपा के खेवनहार बन सकते हैं।

वास्तव में रघुवर दास और अर्जुन मुंडा का सियासी झगड़ा आज का नहीं है। दोनों ही जमशेदपुर से आते हैं, दोनों ही गैर भाजपा पृष्ठ भूमि के हैं। दोनों ही टाटा की धूप छांह से गुजरे हुए हैं। कभी अर्जुन मुंडा का इस्तकबाल बुलंद था, वक्त बदला। अभी रघुवर दास की जयकार है। वो लगातार अर्जुन मुंडा की अनदेखी कर रहे हैं। लेकिन मुंडा जनाधार वाले नेता हैं, उनका असर पूरे प्रदेश में है। संथाल से पलामू तक उनके समर्थक हैं। पार्टी में राजनाथ सिंह से लेकर कृष्ण गोपाल तक उनकी पहुंच है। रामलाल से लेकर सौदान सिंह तक से उनके अच्छे रिश्ते हैं। वर्तमान अध्यक्ष भले ही अर्जुन मुंडा को नापसंद करते हों लेकिन भाजपा जैसी पार्टी में अभी भी अर्जुन के तीर की चमक पूरी तरह निष्प्रभावी नहीं हुए हैं। वो वक्त की सियासत को समझ रहे हैं और अपने तीरों को चमकाने में लगे हुए हैं।

रघुवर दास और अर्जुन मुंडा का सियासी झगड़ा आज का नहीं है। दोनों ही जमशेदपुर से आते हैं, दोनों ही गैर भाजपा पृष्ठ भूमि के हैं। दोनों ही टाटा की धूप छांह से गुजरे हुए हैं। कभी अर्जुन मुंडा का इस्तकबाल बुलंद था, वक्त बदला। अभी रघुवर दास की जयकार है। वो लगातार अर्जुन मुंडा की अनदेखी कर रहे हैं।

पार्टी के अंदर मुख्यमंत्री के व्यवहार को लेकर जिस तरह से नाराजगी बढ़ रही है, मुंडा उसके समानांतर शक्ति केंद्र के रूप में उभर रहे हैं। पार्टी नेताओं से लेकर अधिकारियों तक का हुजूम उनके यहां उमड़ रहा है। वो सबके कंधे पर हाथ रखकर उनका हाल चाल पूछते हैं। परिवार से लेकर अन्य वर्कर्स के बारे में पूछते हैं। इससे कार्यकर्ता गदगद होकर लौटते हैं।

मुख्यमंत्री की कार्यशैली को लेकर मुंडा अब अपनी नाराजगी छुपाते नहीं हैं। वो कहते हैं सीएम के आस - पास कुछ खास लोगों ने शार्ट सर्किट करा दिया है। इस वज़ह से कार्यकर्ता क्या पार्टी नेता भी सहज तरीके से सीएम तक नहीं पहुंच सकते। ऐसे में क्या उम्मीद रखेंगे कार्यकर्ता ! भाजपा की बहुमत वाली सरकार है, लोगों की उम्मीदें कार्यकर्ताओं के साथ जुड़ी होती हैं, वर्कर ही वोट मांगने जाते हैं, अगर कहीं कुछ गलत होता है तो पीड़ित इसी वर्कर के पास पहुंचता है बाद में विधायक और सांसद के पास जाता है। अब वर्कर अपनी बात कहां रखे!

ऐसे कई सवाल हैं, जिसने भाजपा के इस अर्जुन को विचलित कर दिया है, इसलिए पार्टी फोरम पर अपनी बात कहते कहते थक चुके अर्जुन मुंडा ने अखबार के जरिये अपनी बात कही। इसका तत्काल असर भी दिखा। रांची से दिल्ली तक हरकत में आया। पार्टी के अध्यक्ष के बर्ताव से भी लगा जैसे सियासी रिश्तों के जमे बर्फ पिघल रहे हैं।

कांग्रेस की संक्रामक बीमारी अब भाजपा में भी

टंगखिंचवा वायरस का कैसे इलाज़ करेंगे धर्मपाल सिंह !

राजनीति में एक भीतरघात वायरस है, जिसे स्थानीय नेता अपनी जुबान में टंगखिचवा वायरस या कनफुकवा वायरस भी कहते हैं। इसी ने कांग्रेस पार्टी का सबसे ज्यादा नुकसान किया। कांग्रेस को जितना जनता ने खारिज किया, उससे अधिक एक नेता ने दूसरे की सियासी कब्र खोदकर पार्टी को इस हाल में पहुंचा दिया। अब वही वायरस भाजपा में भी ज्यादा तेज़ी से फैला है। इससे पार्टी का बंटाधार हो रहा है। अगर हम झारखण्ड भाजपा का दृश्य देखें तो स्थिति चौंकानेवाली है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मण गिलुआ राष्ट्रीय अध्यक्ष के कार्यक्रम से अचानक चाईबासा चले गए। उन्होंने बाद में चाहे लाख सफाई दी लेकिन कार्यकर्ताओं में यह संदेश तो चला ही गया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष और प्रदेश अध्यक्ष के बीच संवादहीनता है। गिलुआ आखिर नाराज क्यों हुए ! पार्टी के लोग बताते हैं कि पूर्व नौकरशाह जेबी तुबिद को उठाने और लक्ष्मण गिलुआ को गिराने की ऊपर की कोशिशों के चलते वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष इतने नाराज़ हुए कि अमित शाह को विदा करने भी नहीं पहुंचे।

धनबाद में सांसद पीएन सिंह, नगर विधायक राज सिन्हा और मेयर चंद्रशेखर अग्रवाल सरेआम झगड़ रहे हैं। अखबारों में एक दूसरे के खिलाफ बयान दे रहे हैं, कभी-कभी तो इनके परस्पर विरोधी बयानों का स्तर इतना नीचे गिर जाता है कि पार्टी का सामान्य कार्यकर्ता भी हतोत्साहित हो जा रहा है। वही स्थिति बाघमारा विधायक ढूल्लू महतो और गिरिडीह के सांसद रविन्द्र पांडेय की है। बाघमारा विधायक ने तो कई बार बयानों में मर्यादा का निम्नतम स्तर भी पार किया।

> ऐसे में अब सबकी नज़र संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह पर है. पर वो क्या करेंगे ! कैसे चुनावी मोड में आ चुके झारखंड में पार्टी को कनफुकवा नेताओं से बचायेंगे ! कैसे जमीनी पकड़ वाले नेताओं को ज्यादा मौका देंगे, क्योंकि मुख्यालय में बैठे हुए एक से एक दिग्गज कनफुकवा नेता किसी भी नए नेता का पर कतरने को तैयार बैठे हैं.

ऐसे दर्जनों मामले हैं, जिसमें भाजपा के वरिष्ठ नेता ही एक दूसरे पर जुबानी हमला कर पार्टी को शर्मशार कर रहे हैं। इसकी जड़ में है नेताओं की महत्वाकांक्षा। विधायक सांसद को नीचा गिराकर अपना सियासी रास्ता बनाना चाहते हैं और इस सिलसिले में पार्टी अनुशासन की धज्जियां उड़ रही है। पार्टी अध्यक्ष का काम है इन मामलों को देखना और प्रदेश यूनिट में अनुशासन लाना, लेकिन झारखण्ड भाजपा संगठन में तो ऐसा होते नहीं दिख रहा। ना तो प्रदेश अध्यक्ष ने कभी अनुशासनहीनता पर कड़े तेवर दिखाए और ना ही वो नए चेहरों को सामने लाकर पार्टी कार्यकर्ताओं में ही जोश भर पाए।

ऐसे में अब सबकी नज़र संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह पर है। पर वो क्या करेंगे ! कैसे चुनावी मोड में आ चुके झारखंड में पार्टी को कनफुकवा नेताओं से बचायेंगे ! कैसे जमीनी पकड़ वाले नेताओं को ज्यादा मौका देंगे, क्योंकि मुख्यालय में बैठे हुए एक से एक दिग्गज कनफुकवा नेता किसी भी नए नेता का पर कतरने को तैयार बैठे हैं। चुनाव नजदीक है, ऐसे में मंझे हुए संगठनकर्ता धर्मपाल सिंह के सामने चुनौतियां भी बेशुमार हैं।

भीतरघात कहीं नासूर ना बन जाये...

पिछली बार जब राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह झारखण्ड के दौरे पर आये थे तो प्रदेश टीम को 90 फीसदी से अधिक टास्क पूरे करने पर उन्होंने बधाई भी दी थी। पार्टी नेता बताते हैं कि ये सब संगठन महामंत्री की निरंतर मोनिटरिंग और प्रोत्साहन का ही कमाल था। लगातार अलग अलग क्षेत्र के कार्यकर्ताओं से संवाद कर उनमें जोश भरने वाले धर्मपाल सिंह अथक परिश्रम कर संगठन और सरकार के बीच सबसे महत्वपूर्ण सेतु हैं। एक एक बूथ का डिटेल्स हमेशा उनके पास होता है और किसी भी नेता से फोन पर बात कर जमीनी सच से वाकिफ होना उनकी आदतों में शुमार।

उत्तर प्रदेश में भाजपा के कई नेता बताते हैं कि सबसे बड़े प्रदेश में भाजपा की करिश्माई जीत के पॉलिटिकल इंजीनियरों में एक रहे हैं धर्मपाल। दरअसल दो दशक से अधिक समय तक यूपी की युवा और छात्र राजनीति में अलग पहचान रखने वाले धर्मपाल सिंह की पहचान बेजोड़ संगठनकर्ता की रही है। उनके झारखण्ड आने के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं के हौसले बेहद बुलंद हुए हैं। बेहद कम समय में कार्यकर्ताओं के साथ जीवंत संवाद कायम कर इन्होंने निराश हो रहे समर्पित कार्यकर्ताओं को लक्ष्य देकर संगठन के विभिन्न कार्यों में उन्हें लगा दिया है। झारखण्ड आते ही संगठन प्रभारी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के तय किए गए लक्ष्य के अनुरूप काम करना शुरू कर दिया था।

तेज़ी से काम करने और कार्यकर्ताओं को साथ लेकर एक-एक बूथ की रणनीति तैयार करने में माहिर धर्मपाल सिंह झारखण्ड फतह के अपने मिशन पर लग गए हैं। हर प्रकोष्ठ के लिए लक्ष्य का निर्धारण कर उससे सम्बंधित लोगों के लिए विजन डॉक्यूमेंट इन्होंने तय कर दिए हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जैसे अन्य सहयोगी संगठनों के साथ समन्वय स्थापित कर काम करने के कारण हर ग्रुप में वैचारिक स्तर पर जोश भरा है।

पार्टी के एक जुझारू युवा नेता कहते हैं कि धर्मपाल जी हर कार्यकर्ता को बोलने का मौका देते हैं। हर कार्यकर्ता की परेशानी से खुद जुड़ जाते हैं। इस वज़ह से पहली बार ऐसा हो रहा है कि कोई भी सामान्य भाजपा कार्यकर्ता देर रात भी बिना झिझक उन्हें फ़ोन कर लेता है।

> धर्मपाल जी हर कार्यकर्ता को बोलने का मौका देते हैं। हर कार्यकर्ता की परेशानी से खुद जुड़ जाते हैं। इस वज़ह से पहली बार ऐसा हो रहा है कि कोई भी सामान्य भाजपा कार्यकर्ता देर रात भी बिना झिझक उन्हें फ़ोन कर लेता है।

भाजपा के कई जिलाध्यक्ष भी कहते हैं कि धर्मपाल जी हमलोगों से बहुत ज्यादा काम करा रहे हैं। हमलोग परेशान हैं, एक टास्क खत्म होता नहीं है कि दूसरा टास्क सामने। हर मंडल में सक्रिय कार्यकर्ताओं की लगातार बैठकें हो रहीं हैं। बूथ कमेटी सक्रिय है।

धर्मपाल सिंह के बूथ मैनेजमेंट का ही कमाल है कि हार की कगार पर दिख रहे भाजपा को कार्यकर्ताओं ने निकाय चुनावों में भी जबरदस्त जीत दिला दी। पार्टी ने राज्य के सभी पांचों नगर निगमों पर कब्जा जमा लिया। 34 निकायों में से भाजपा ने कुल 22 मेयर और अध्यक्ष की सीटें झटक ली। न सिर्फ शहरों में बल्कि गांवों भी बीजेपी ने शानदार प्रदर्शन किया।

भाजपा ने झारखंड में सबसे पहले पन्ना प्रमुख बनाने का अभियान छेड़ा पन्ना प्रमुख बनाने के बाद समय-समय पर उनके साथ बैठक, सुझाव और फीडबैक का दौर शुरू हुआ। हर बूथ को टारेगट कर रणनीति बनायी गयी। निकाय चुनाव क्षेत्र के लिए प्रदेश के 50 नेताओं की सूची तैयार की गयी। चुनाव से एक माह पहले ही इन नेताओं को अलग-अलग चुनाव क्षेत्रों की जवाबदेही सौंप दी गयी।

जातीय समीकरण के हिसाब से नेताओं का दौरा तय किया गया। प्रत्येक बूथ पर पंचायत से लेकर प्रदेश स्तर के नेताओं की सूची तैयार की गयी। मोर्चा और प्रकोष्ठों के नेताओं को भी सक्रिय किया गया। इसी के साथ असंतुष्ट कार्यकर्ताओं से बातचीत का सिलसिला भी जारी रहा। पुराने कार्यकर्ताओं को सक्रिय किया गया। प्रत्येक कार्यकर्ता को चुनाव में कोई न कोई जिम्मेदारी सौंपी गयी। हर जिले के लिए फीडबैक, सुझाव जानकारी, समस्या के लिए टीम बनायी। रांची स्थित प्रदेश मुख्यालय में कंट्रोल रूम काम करने लगा। 10 लोगों की टीम 24 घंटे मुख्यालय में तैनात थी। आने वाले फीडबैक पर तुरंत एक्शन होता था। पहली बार सामान्य कार्यकर्ता से लेकर विधायक, मंत्री और सांसदों तक की चुनावी जिम्मेदारी पहले से तय थी।

सियासत नहीं ... सुदेश को ही खत्म करने की साजिश

श्रीधर वत्स

पहले के दो कातिलाना हमले...अभी खत्म करने की साज़िश. आखिर ऐसा क्या है! कौन है जो झारखण्ड में पिछड़ों और वंचितों के बड़े नेता सुदेश महतो को खत्म करना चाहता है! आजसू के सुप्रीमो सुदेश खेल के जरिये युवाओं से जुड़े रहते हैं. किसी भी मैच में बुलाने पर पहुंच जाते हैं. ग्रामीण युवाओं से संवाद का उनका अपना तरीका है खेल. ऐसे में क्या इस सर्वसुलभ लोकप्रिय युवा नेता को सचमुच जान का खतरा है! पुलिस के दस्तावेज तो यही कह रहे हैं.

गिरफ्तार नक्सली ने झारखण्ड पुलिस को जो जानकारी दी है, उसके अनुसार सुदेश महतो की हत्या के लिए उग्रवादी संगठन को 5 करोड़ की सुपारी दी गयी थी. झारखण्ड में पूर्व मंत्री रमेश सिंह मुंडा की हत्या भी ऐसे ही सुपारी देकर कराई गयी थी, जिस मामले की जांच एनआईए कर रही है, एजेंसी के अनुसार पूर्व मंत्री राजा पीटर ने रमेश सिंह मुंडा की हत्या कराई थी.

कई आजसू नेता कहते हैं कि ऐसे में सुदेश महतो पर हमले के मामले को गंभीरता से लिया जाना चाहिए.

झारखंड के पूर्व उप मुख्यमंत्री और आजसू पार्टी के सुप्रीमो सुदेश कुमार महतो की हत्या की साजिश का खुलासा होने से राज्य में हड़कंप मच गया है। पुलिस के अनुसार नक्सली संगठन पीएलएफआई के कमांडर और हार्डकोर उग्रवादी जीदन गुड़िया ने उनकी हत्या की सुपारी ली थी। जीदन को राज्य के एक नेता ने सुदेश महतो की हत्या के लिए पांच करोड़ की सुपारी दी थी। कौन है यह नेता ! इसपर सब अभी चुप हैं.

बताया जा रहा है कि पांच करोड़ की सुपारी मिलने के बाद पीएलएफआई उग्रवादियों ने आजसू पार्टी में शामिल होकर पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो की हत्या करने की योजना बनाई थी। इसके लिए देवसिंह मुंडा पार्टी में शामिल भी हो गया था। यह खुलासा खुद देवसिंह ने किया था। कुछ समय पहले जोन्हा बाजार में देवसिंह ने सुदेश की हत्या की साजिश रचने की बात कही थी। उसने कहा था कि संगठन के कुछ लोग आजसू पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर सुदेश महतो को विश्वास जीतेंगे।

फिर मौका मिलते ही हमला कर देंगे। इसके कुछ दिन बाद ही सुदेश महतो की मौजूदगी में देवसिंह आजसू पार्टी में शामिल हो गया। उसे अन्य साथियों को भी पार्टी की सदस्यता दिलानी थी। उसने इस पर काम भी शुरू कर दिया था। लेकिन कुच्चू में क्रशर जलाने के मामले में पकड़े जाने के बाद इस मामले का पर्दाफाश हो गया। उसकी गिरफ्तारी से पुलिस ने एक बार फिर सिकिदरी, अनगड़ा और सिल्ली इलाके में चौकसी बढ़ा दी और पीएलएफआई के विस्तार पर ब्रेक लग गया।

हत्या की साजिश के खुलासे के बाद शुक्रवार को आजसू पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं अपना गुस्सा जाहिर किया। इसमें सुदेश महतो की सुरक्षा बढ़ाने और साजिश का खुलासा करने की मांग की गई।

साल 2014 में दो बार सुदेश की हत्या का प्रयास किया गया था। 27 और 28 जनवरी 2014 को सिल्ली में आयोजित प्रतिभा दर्शन महोत्सव में सोनाहातु के कुछ नक्सली एक बैग में शक्तिशाली टाइमर लेकर पहुंचा था। वह सुदेश के साथ मंच पर भी चढ़ा था। लेकिन बम का बड़ा साइज होने के कारण इसे फिट नहीं किया जा सका।

इसके बाद जीदन ने 26 फरवरी 2014 को दूसरा प्रयास किया। एक शादी समारोह में सुदेश महतो को मारने की योजना थी। भोजन करने के दौरान हमला

किया जाना था। लेकिन हमले से कुछ घंटे पहले ही रांची पुलिस ने जीतन के सभी साथियों को वहां से गिरफ्तार कर लिया था।

जीतन गुड़िया ने 2013 में ही सुदेश की हत्या की सुपारी ले ली थी। उसने दो बार सुदेश की हत्या करने की कोशिश की थी, लेकिन असफल रहा। 5 साल बीत जाने के बाद भी जब जीतन अपने मंसूबों में कामयाब नहीं हुआ तो उस नेता ने सुपारी की रकम वापस करने की मांग की। जीदन ने उस नेता से कुछ और समय मांगा। फिलहाल रांची पुलिस ने उस नेता के नाम का खुलासा नहीं किया है। अब पुलिस नक्सली के इस बयान की सच्चाई जानने में जुटी है।

इन सब के बीच बड़ा सवाल ये है कि सुदेश महतो को कौन नेता अपने रास्ते से हटाना चाहता है। सियासी गलियारे में इस खुलासे के बाद चर्चा हो रही है कि सुदेश महतो के संबंध सत्ताधारी दल हो या विपक्षी दल सबों से ठीक हैं। किसी भी नेता से कोई बड़ा विवाद नहीं है। उनकी पार्टी आजसू अभी राज्य की सत्ता में है, तो कौन नेता ऐसा है जिसकी आखों में सुदेश महतो खटक रहे हैं। जिसकी सियासी राह में सुदेश रोड़ा अटका सकते हैं। यह बड़ा प्रश्न है, जिसका जवाब झारखण्ड पुलिस को अति शीघ्र ढूंढना चाहिए.

सरकार की आंखों में क्यों चुभ रहे प्रदीप यादव !

झाविमो विधायक प्रदीप यादव ने जिस प्रकार संतालपरगना में गोड्डा में अडानी पावर के लिए जबरन जमीन छीनने का मुद्दा उठाया है उससे भाजपा को नुकसान होता दिखाई दे रहा है। इस मुद्दे को लेकर प्रकार प्रदीप यादव ने सरकार की नाक में दम कर रखा है, इस मामले पर अवाज उठाने के कारण प्रदीप यादव पिछले साल दुमका जेल में बंद कर दिए गए थे बाद में उन्हें जमानत मिली थी। इसके साथ ही प्रदीप यादव अक्सर अपने सवालों से रघुवर सरकार को असहज करते रहे हैं। दल बदल के मामले पर भी उन्होंने सरकार को घेर कर खूब किरकिरी की है। **उदय कुमार चौहान** का विश्लेषण ...

झारखंड विधानसभा का मानसून सत्र खत्म हो गया। इस सत्र में भी सत्तापक्ष और विपक्ष के शोर-शराबे और हंगामे के कारण सदन बाधित रहा, ठीक से कामकाज नहीं हो सका। इन सब के बीच इस बार सदन के बाहर और भीतर दोनों जगहों पर सत्ताधारी दल और विपक्ष में खूब नोकझोंक हुई, सदन की गरिमा तार-तार हुई, कई बार विधानसभा अध्यक्ष को ये कहना पड़ा कि उन्हें खेद है कि सदन की कार्यवाही ठीक तरीके से नहीं चल पा रही है। जनता सबकुछ देख रही है, वह अपना फैसला सुनाएगी। कई बार दिनेश उरांव विधायकों के आचरण से मर्माहत दिखे।

इन सब के बीच सदन के अंतिम दिन जिस प्रकार मुख्यमंत्री रघुवर दास और झाविमो विधायक प्रदीप यादव के बीच तीखी नोक-झोंक हुई उससे राजनीतिक गलियारे में खूब चर्चा हो रही है कि आखिर मुख्यमंत्री ने प्रदीप यादव पर इतनी तल्ख टिप्पणी क्यों की? प्रदीप यादव से इतने खफा क्यों हैं सीएम ?

सियासी जानकारों की मानें तो इसकी कई वजहें हैं, पहली वजह तो ये है कि जिस प्रकार प्रदीप यादव और झाविमो प्रमुख बाबूलाल मरांडी ने 6 दलबदल के आरोपी विधायकों को निशाने पर लिया है और उनके खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है उसमें डॉ रविंद्र राय और सीएम रघुवर दास की भी फजीहत हो रही है। बाबूलाल के पत्र में सीएम का नाम भी उछाला गया है कि खरीद-फरोख्त में वे भी शामिल हैं। इससे न केवल पार्टी के अंदर बल्कि राज्य की जनता में 6 विधायकों सहित रविंद्र राय और सीएम रघुवर दास की बदनामी हुई है। जानकारों की मानें तो प्रदीप यादव और बाबूलाल ने जानबूझकर ये मामला ऐसे वक्त उठाया है ताकि आगामी चुनावों तक इसकी गूंज सुनाई दे और इसकी बदनामी की छींटें बीजेपी पर ऐसा पड़े की पार्टी को इसका खामियाजा भुगतना पड़े। इसके अलावा झाविमो विधायक ने जिस प्रकार संतालपरगना में गोड्डा में अडाणी पावर के लिए जबरन जमीन छीनने का मुद्दा उठाया है उससे पार्टी को नुकसान होता दिखाई दे रहा है। कहा जा रहा है कि अडानी प्रोजेक्ट को लेकर सीएम रघुवर दास सीधे तौर पर पीएम मोदी के निशाने पर हैं। वहीं जिस प्रकार प्रदीप यादव ने उनके नाक में दम कर दिया है, उससे सीएम बेहद नाराज हैं।

पिछले साल इस मामले को लेकर विधायक प्रदीप यादव दुमका जेल में बंद थे उन्हें अगस्त में जमानत मिली थी। अडाणी पावर प्लांट के विरोध में जेवीएम नेता प्रदीप यादव अनशन पर बैठे थे। इस दौरान सरकारी कार्य में बाधा पहुंचाने के आरोप में पौड़ेयाहाट थाना में उनके खिलाफ मुकदमा दायर किया गया था।

इसलिए जब मुख्यमंत्री ने कथित तौर पर जब ये धमकी दी कि प्रदीप यादव को जेल में सड़ा दिया जाएगा तो प्रदीप यादव ने इस पर कड़ी आपत्ति जताई। लोग कह रहे हैं कि प्रदीप जो जेल में बिताए गए दिन याद आ गए हों। पर इस धमकी के बाद सियासी गलियारे में यह सवाल भी उठने लगा है कि क्या सूबे का का मुख्यमंत्री किसी आम- अवाम के मुद्दे को उठाने पर इस प्रकार की बातें खुलेआम सदन में कहा सकता है। आखिर ऐसी क्या वजह है कि सीएम रघुवर दास बेचैन हैं और झाविमो विधायक द्वारा आरोप लगाए जाने पर आपा खो देते हैं।

बताया जा रहा है कि विपक्ष के कई सवालों पर घिरी सरकार सबसे ज्यादा आहत प्रदीप और बाबूलाल की जोड़ी से है, क्योंकि इन दोनों नेताओं ने बीजेपी का कुछ ज्यादा ही नुकसान किया है। जनता में एक ओर जहां यह दिखाने की कोशिश की है कि सरकार जानबूझकर किसानों, आदिवासियों और गरीबों का जमीन लूट रही है। वहीं दूसरी ओर सतांलपरगना इलाके में बीजेपी की जमीनी पकड़ को मजबूत बनाने की कवायद को कमजोर करने की कोशिश की है। संतालपरगना में बीजेपी को इसका खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। सीएम रघुवर दास और पीएम मोदी इस आदिवासी बहुल इलाके पर विशेष रूप से फोकस कर रहे हैं। लेकिन झाविमो की जनमुद्दों को लेकर की गई सियासी दखल से बीजेपी के मंसूबों पर पानी फिरती दिखाई दे रही है।

सारठ और जामताड़ा में खादी, खाकी और कोयला चोरों का त्रिकोण

चितरा को चुग रहे नेता जी

नेता, अफसर और कोयला माफिया की ऐसी मिलीभगत है कि इसे तोड़ना असंभव सा दिखाई पड़ता है। इस इलाके की राजनीति कोयले पर ही टिकी है। इस क्षेत्र के जितने भी जनप्रतिनिधि हुए सबों ने जमकर काले हीरे का मजा लिया। इनकी ठाट-बाट कोयले की काली कमाई पर ही टिकी हुई है।

राजकिशोर सिंह

पिछले तीन चार दशकों से जामताड़ा एवं सारठ की राजनीति का आधार चितरा माइंस के कोयला पर टिका है. जितने भी जनप्रतिनिधि हुए हैं, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जमकर काले हीरे का मजा लेने में किसी ने कोई कसर नहीं छोड़ा. इनकी ठाट बाट कोयले की काली कमाई पर टिकी हुई है.

चितरा माइंस में खनन कार्य के लिए भूमि अधिग्रहण, विस्थापितों को मुआवजा भुगतान से लेकर पुनर्वास से शुरू होता है नेताओं की स्वार्थ सिद्धि का खेल.

इस प्रक्रिया में जनप्रतिनिधि कभी लाभुकों की ओर से तो कभी माइंस प्रबंधन की ओर से दांव खेलते हैं, उसके बाद फिर खनन कार्य में भी हिस्सेदारी की जुगाड़ करते हैं. खनन मशीनरी एवं ढुलाई कार्य हेतु डंफर, ट्रक आदि में इनकी भागीदारी के किस्से सर्वविदित रहे हैं. जनप्रतिनिधियों की राजनीति के सबसे मजबूत आधार हैं इन विधानसभा क्षेत्रों के हजारों मजदूर. यही मजदूर इनके मतदाता भी हैं.

1974 में चितरा माइंस का राष्ट्रीयकरण हुआ. इससे पूर्व माइंस की बागडोर निजी हाथों में थी, जो कोयला को पं बंगाल के विभिन्न औद्योगिक प्रतिष्ठानों में भेजते थे. 1990-91 से जामताड़ा रेलवे साइडिंग के द्वारा देश के विभिन्न विद्युत ताप परियोजना में कोयला भेजने का काम शुरू हुआ. पूर्व में उन जगहों पर ट्रकों से कोयला ढुलाई कार्य किया जाता था परन्तु बाद में रेलवे के द्वारा कोयला भेजने का काम शुरू हुआ.

@Rajneeti_Guru | @gururajneeti
www. rajneetiguru.com
YouTube Rajneeti Guru Web News Bulletin

चितरा माइंस का एक काला सच है कोयला चोरी. माइंस के मुख्य द्वार से ट्रकों पर कोयला निकलते ही शुरू हो जाता है कोयला चोरी का काला खेल, जो आजतक निरंतर जारी है. इस धंधे में भी क्षेत्र के हजारों लोग लिप्त हैं, जिनकी सुबह कोयला चोरी कर अवैध व्यापारी के हाथों बेचने से शुरू होती है. शाम तक प्रति परिवार एक से दो हजार रुपए की शुद्ध कमाई नहीं हुई तो बेचैन हो जाते हैं धंधेबाज़. यह धंधा चितरा माइंस क्षेत्र से लेकर जामताड़ा रेलवे साइडिंग तक धड़ल्ले से फल फूल रहा है.

यहां कोयला चोरी कर लोग कई अन्य जिलों के अवैध कोयला व्यापारी के हाथों औने- पौने भाव बेचते हैं, जो अपने-अपने जिलों के ईट भठ्ठों एवं छोटे-छोटे उद्योगों के भठ्ठियों में आपूर्ति कर कमाई करते हैं. हजारों की संख्या में लोग विभिन्न सड़क मार्ग से अन्य जिलों में साईकिल, बैलगाड़ी एवं अन्य छोटे वाहनों से गंतव्य स्थानों तक पहुंचाने में लगे हैं.

सूत्रों की मानें तो हर रोज लगभग 100 टन कोयला की चोरी हो रही है. यह नुकसान पूर्णत इसीएल चितरा माइंस का हो रहा है. चितरा माइंस प्रबंधन भी इसे रोकने में शिथिलता बरतने में ही भलाई समझता है. पिछले कई वर्षों में लगभग दर्जनों बार जिला प्रशासन के कार्रवाई के बाद स्थिति बिगड़ी ही है, जिसे बाद में कमोबेश चितरा प्रबंधन को ही झुकना पड़ा है. कई बार पुलिस को कार्रवाई में जामताड़ा रेलवे साइडिंग में गोली चलानी पड़ी है.

इस 24 जुलाई को भी इन कोयला चोरों का संगठित गिरोह पुलिस पर हमला कर रायफल छीनकर भाग रहा था. उसी वक्त दूसरे सुरक्षा गार्ड ने गोली चलाई जिससे डर कर कोयला चोर रायफल छोड़कर भाग खड़े हुए . इस कांड के बाद सुरक्षा गार्ड के बयान पर थाना में मामला दर्ज कराया गया है.

इस घटना में भी दोनों पक्ष की ओर से लीपापोती की कोशिश की गई. जिसके तहत ही थाना में सिर्फ सरकारी काम में बाधा उत्पन्न करने का मामला दर्ज कराया गया है, जबकि सच्चाई है कि कोयला चोरों को रेल के डिब्बे पर चढ़कर बेधड़क कोयला चोरी करने से सुरक्षा गार्ड के मना करने पर मामला बिगड़ने पर हुई झड़प में ही रायफल छीनने तक \की घटना हुई है.

इसके पूर्व भी कई बार इस प्रकार की घटना घटित हो चुकी है जिसमें कोयला चोरी रोकने में पुलिस कार्रवाई के बाद कोयला चोरों पर कार्रवाई रोकने में विधायक को मध्यस्थता करनी पड़ी है. विधायक के पहल पर मामला ठंडा पड़ता रहा है . चितरा से जामताड़ा जाने के रास्ते में भी कई बार डंफरों से कोयला चोरी के मामले में पुलिस के साथ झड़प हो चुकी है. जामताड़ा रेलवे साईडिंग में रेक लगने से लेकर डम्प एरिया में घुसकर कोयला चोरी की जाती है।

मौके पर जिला खनन टास्क फोर्स के निर्णय के आलोक में कोयला चोरी को रोकने के लिए 50 होमगार्ड के जवानों को प्रतिनियुक्त किया गया है, यह नकारा साबित हो रहा है. यूं कहें तो कोयला चोरों के रहमोकरम पर साईडिंग में कोयला बचा हुआ है. ये कोयला चोर बेबा सुड़ीपाड़ा, धांधड़ा दुमका रोड एवं अगल-बगल के ग्रामीण क्षेत्रों से जुटते हैं . चितरा प्रबंधन एवं कोयला सम्प्रेषण कार्य में लगे ट्रांसपोर्ट कम्पनी के गार्ड भी उक्त कोयला चोरों के आगे नतमस्तक हैं . विभिन्न पार्टियों के लोगों का दबदबा रहने के कारण प्रारंभ से ही कोयला रेक लोडिंग से लेकर निगरानी एवं कोयला पिकिंग कार्य के लिए सबसे ज्यादा संख्या में मजदूर एवं गार्ड झामुमो का रहा है, जो सिर्फ कोरम पूरा करने में लगा हुआ है. वहीं ईसीएल का सिक्युरिटी इंचार्ज भी लाचार ही है . पूर्व में चितरा प्रबंधन की ओर से कई बार कोयला चोरी रोकने के लिए सीआईएसएफ को लगाने की बात की गई परन्तु वह निर्णय नेताओं के दबाव के सामने जमींदोज होकर रह गया .

इस कोयला चोरी में खाकी ने भी जमकर गंगा नहाया. चितरा थाना एवं जामताड़ा पुलिस की चांदी कट रही है. क्यों न हो ! पुलिस भी जानती है कि स्थानीय जनप्रतिनिधि के समर्थन से ही कोयला चोरी जमकर हो रही है. आज तक किसी भी जनप्रतिनिधि ने कोयला चोरी रोकने की दिशा में एक बयान तक देना उचित नहीं समझा . सारा खेल नेताओं के वोटबैंक से जुड़ा हुआ है. चितरा माइंस में वर्तमान कृषि मंत्री रणधीर सिंह एवं पूर्व विधानसभाध्यक्ष शशांक शेखर भोक्ता की खनन कार्य में प्रत्यक्ष रूप से बड़ी हिस्सेदारी रही है. वैसे कई अन्य पूर्व विधायकों एवं अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी ठेकेदारी से लेकर अन्य सुविधाओं का जमकर मजा लिया है . चितरा प्रबंधन ने इन माननीयों के लिए बकायदा एक सुविधायुक्त गेस्ट हाउस भी उपलब्ध कराया है, जहां माननीयों की रणनीति से लेकर कारोबार पर स्थानीय समर्थकों व पदाधिकारियों के साथ विमर्श होता है. लजीज व्यंजनों की भी व्यवस्था सर्वथा उपलब्ध रहती है.

कोयला चोरी में खाकी ने भी जमकर गंगा नहाया. चितरा थाना एवं जामताड़ा पुलिस की चांदी कट रही है. क्यों न हो ! पुलिस भी जानती है कि स्थानीय जनप्रतिनिधि के समर्थन से ही कोयला चोरी जमकर हो रही है. आज तक किसी भी जनप्रतिनिधि ने कोयला चोरी रोकने की दिशा में एक बयान तक देना उचित नहीं समझा .

सूत्रों की मानें तो जिन नेताओं के हाथ में क्षेत्र की बागडोर रहती है, उनके इशारे पर महाप्रबंधकों की पदस्थापना होती रही है, इसीएल के सर्वोच्च पदाधिकारी भी इन नेताओं की इच्छा व सुविधा का ख्याल रखते हैं.

वैसे जामताड़ा के वर्तमान उपायुक्त आदित्य कुमार आनंद कोयला चोरी को लेकर गंभीर हैं , उन्होंने कहा है कि जिला खनन टास्क फोर्स को कोयला चोरी रोकने का सख्त निर्देश दिया गया है. इसे हर हाल में रोका जाएगा. उन्होंने कहा कि कोयला चोरी रोकने में जो भी बाधा करेगा उस पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी.

धनबाद में भी जारी है

कोयले का काला खेल

उमेश हेलीवाल

धनबाद में कोयला चोरी का शोर इतना बढ़ा कि रांची के बाद दिल्ली तक सक्रिय हो गया. झारखण्ड के गृह सचिव एसकेजी रहाटे ने डीजीपी को कोयला तस्करों के खिलाफ जांच का आदेश दिया. अब डीआईजी और एसएसपी राज्य सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपेंगे. धनबाद में दशकों से कोयला चोरी धडल्ले से हो रही है और रिपोर्ट-रिपोर्ट का खेल भी हो रहा है. कहा जाता है कि अगर धनबाद में कोयला चोरी रोक दी जाये तो खाकी और खादी का तिलस्म ही टूट जाये. कोयले की काली कमाई पर शहर की सैकड़ों इमारतें खड़ी हैं. ये इमारतें प्रतीक हैं कोयला कारोबार में माफिया घुसपैठ की. अरबों रूपये के कोयले के काले कारोबार में पुलिस अफसर, नेता और इस अवैध कारोबार में शामिल लोग कानून को अपनी जेब में रखते आये हैं. बहुत दिनों से धनबाद में कोयले का काला कारोबार कम था.एकाध इलाके में ही चोरी छुपे यह हो रहा था, लेकिन विशेष शाखा की रिपोर्ट के अनुसार अभी बड़े पैमाने पर कोयले की तस्करी हो रही है तथा खाकी और खादी का खुला संरक्षण इसे मिल रहा है.बीसीसीएल को कोयला तस्करी से अरबों का नुकसान पहुँचाया जा रहा है. अब जब राज्य सरकार गंभीर हुई है तो आनन फानन में छोटे कोयला चोरों की गिरफ्तारी हो रही है, लेकिन बड़ी मछलियों को छुआ भी नहीं जा रहा है.

धनबाद के कतरास थाना से सबसे अधिक गड़बड़ी की सूचना मिल रही है. बाघमारा के विधायक पर कई आउटसोर्सिंग कम्पनी को धमकाने के आरोप पर जांच चल रही है और ऐसे ही एक मामले में पुलिस विभाग के अधिकारीयों को विधायक की मदद करने के आरोप में शर्मसार भी होना पड़ा है. कतरास के अलावा भूली थाना, गोविंदपुर, झरिया, सिंदरी और निरसा थाना क्षेत्र के प्रभारियों की भूमिका पर लगातार सवाल खड़े हो रहे हैं. संभव है जाँच के बाद कई पर गाज भी गिरे.

झामुमो, भाजपा, कांग्रेस और राजद के कई नेताओं पर इस धंधे में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शामिल होने का भी आरोप है. भाजपा के एक बड़े नेता पर तो खुलेआम पसंद के अधिकारियों की पोस्टिंग कराने का भी आरोप है. झामुमो के एक बड़े नेता जी कोयला चोरी के कई मामले में नामजद अभियुक्त भी हैं. संभव है सरकार के कड़े निर्देशों के बाद यहां पुलिस अधिकारियों के तबादले भी जल्द ही किये जाएं.

मानसून सत्र में भी नहीं खत्म हुआ डेड लॉक

गरजकर गुजरा सियासी मानसून...

उदय कुमार चौहन

झारखंड विधानसभा का मानसून सत्र सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच तीखी नोंकझोंक के बीच गुजरा। विपक्ष ने सरकार पर खूब आरोप मढ़े, नीतियों पर सवाल उठाए और लोकतंत्र की हत्या करने तक की बात कही। सरकार की ओर से भी विपक्ष को विकास विरोधी और देशद्रोही तक करार दिया गया। सरकार ने अपने रुख से स्पष्ट कर दिया कि वह विपक्ष के विरोध के आगे नहीं झूकेगी और वही करेगी जो उसने तय कर लिया है।

सदन में स्वामी अग्निवेश पर हुए हमले को लेकर भी खूब हंगामा हुआ कहा गया कि स्वामी अग्निवेश पर हमला लोकतंत्र पर प्रहार है और यह एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा है।

झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र में भूमि अधिग्रहण संशोधन विधेयक, भूमि अधिग्रहण संशोधन विधेयक, यूथ कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर बर्बरतापूर्ण लाठी चार्ज, मॉब लिंचिंग, लचर कानून व्यवस्था, झाविमो विधायकों की खरीद-फरोख्त और स्वामी अग्निवेश पर भाजपाई कार्यकर्ताओं के हमले को लेकर विपक्ष ने खूब हंगामा किया।

भूमि अधिग्रहण संशोधन को लेकर सरकार पर आरोप लगाया कि मनमाने तरीके से इस बिल को पास कराया गया जिससे सरकार मुट्ठीभर पूंजीपतियों और उद्योगपतियों की जेब भर सके।

विपक्ष इस मुद्दे को लेकर सरकार पर हमलावर है विपक्ष का कहना है कि सरकार आदिवासियों-मूलवासियों के हक और अधिकार पर लगातार हमला कर रही है। पत्थलगड़ी से लेकर भूमि अधिग्रहण, सीएनटी-एसपीटी हर मुद्दे पर राज्य के आदिवासी-मूलवासियों अधिकारों को छीनने पर सरकार उतारू है।

नेता प्रतिपक्ष हेमंत सोरेन ने सदन में सरकार पर झारखंड की जनता के साथ धोखा देने की बात कही और कहा कि जिस कानून में प्रधानमंत्री, संशोधन नहीं करा सके उसको लेकर मुख्यमंत्री रघुवर दास ने बहुमत के दम पर बिना सदन में चर्चा कराए पास कर दिया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री रघुवर दास गुंडागर्दी के दम पर राज्य को चलाना चाहते हैं। इस सरकार के खिलाफ सदन से सड़क तक लड़ाई चलती रहेगी। उन्होंने कहा कि भूमि अधिग्रहण संशोधन कानून से यहां के आदिवासी और मूलवासी की पहचान खत्म हो जाएगी।

हालांकि, विपक्ष के हर सवाल का जवाब बीजेपी और सरकार तो दे रही है लेकिन सदन में जब यह मुद्दा उठाया गया और सदन को लगातार बाधित किया उसके बावजूद सरकार ने चर्चा कराने से साफ मना

नेता प्रतिपक्ष हेमंत सोरेन ने सदन में सरकार पर झारखंड की जनता के साथ धोखा देने की बात कही और कहा कि जिस कानून में प्रधानमंत्री, संशोधन नहीं करा सके उसको लेकर मुख्यमंत्री रघुवर दास ने बहुमत के दम पर बिना सदन में चर्चा कराए पास कर दिया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री रघुवर दास गुंडागर्दी के दम पर राज्य को चलाना चाहते हैं।

कर दिया। सरकार का मानना है कि यह बिल पास हो चुका है, इसलिए अब इस पर कोई चर्चा की जरुरत नहीं है। विधानसभा में मानसून सत्र का आखिरी दिन भी सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच नोकझोंक और हंगामे के बीच गुजरा। मुख्यमंत्री रघुवर दास और नेता प्रतिपक्ष हेमंत सोरेन ने एक-दूसरे के खिलाफ खूब आरोप-प्रत्यारोप लगाए। नेता प्रतिपक्ष हेमंत सोरेन ने मुख्यमंत्री रघुवर दास पर तीखा प्रहार किया और कहा कि जिस तरीके से मोहम्मद गजनवी ने देश के मंदिरों को लूटा था उसी तरह बीजेपी सरकार झारखंड को लूट रही है। इतना ही नहीं हेमंत सोरेन ने सीएम रघुवर दास को बाहरी बताया। हालांकि, संसदीय कार्य मंत्री नीलकंठ सिंह मुंडा ने सीएम का बचाव किया और कहा कि सीएम की जन्मभूमि और कर्मभूमि से सभी परिचित हैं। इसलिए विपक्ष के नेता को इसका बखान करने की जरुरत नहीं है।

इसके बाद सीएम रघुवर दास ने हेमंत सोरेन पर हमला किया और कहा कि जिसने इतने सालों से राज्य को लूटा वही आज उपदेश दे रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सीएनटी और एसपीटी एक्ट का उल्लंघन सबसे ज्यादा किसने किया है यह राज्य की जनता भलिभांति जानती है। इस पर हेमंत सोरेन ने कहा कि हमारा जमीन और हम ही लूटेंगे यह क्या बात हुई।

इन सब के बीच सदन में स्वामी अग्निवेश पर हुए हमले को लेकर भी खूब हंगामा हुआ कहा गया कि स्वामी अग्निवेश पर हमला लोकतंत्र पर प्रहार है और यह एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा है। पहले बीजेपी और संघ के लोग जानवरों की तस्करी करने वालों पर हमला किया करते थे पर अब साधु-संतों पर भी हमला किया जा रहा है जो बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

विपक्ष ने झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के अंतिम दिन की कार्यवाही शुरु होने से पहले सरकार को घेरने की कोशिश की। विपक्ष ने स्कूलों को समाहित करने के राज्य सरकार के फैसले को लेकर विरोध प्रदर्शन किया।

सदन के बाहर विपक्षी दलों के विधायकों ने हाथों में तख्तियां लेकर इसका विरोध किया। भाकपा माले के विधायक राजकुमार यादव ने कहा कि झारखंड में शिक्षा का स्तर राष्ट्रीय औसत से काफी पीछे है। ये राज्य के लिए चिंता की बात है। उन्होंने कहा कि सरकार को शिक्षकों और छात्रों के अनुपात को ध्यान में रखकर ही कोई फैसला करना चाहिए। स्कूलों के मर्जर का फैसला राज्य की शिक्षा व्यवस्था को और कमजोर करेगा। वहीं इस मुद्दे पर जवाब देते हुए शिक्षामंत्री नीरा यादव ने कहा कि मर्जर के फैसले से पहले स्थानीय विधायकों और सांसदों से भी फीडबैक ली गई थी। उन्होंने कहा कि कई स्कूलों में 3 छात्रों पर 2 शिक्षक जबकि कई स्कूलों में ज्यादा छात्रों के बावजूद कम शिक्षक होने से शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। वहीं इस मामले पर झाविमो विधायक प्रदीप यादव ने स्कूलों के मर्जर के खिलाफ विशेष चर्चा के लिए कार्यस्थगन लाया, जिसे स्पीकर ने अमान्य करार दिया।

हालांकि, सत्ता पक्ष की ओर से बीजेपी विधायक राधाकृष्ण किशोर और रामकुमार पाहन ने भी इस मसले पर सरकार का ध्यान आकृष्ट कराया। दोनों ने बताया कि झारखंड की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए कई स्कूलें ऐसी जगह खोली गई हैं जहां शिक्षक और बच्चे के अनुपात को आधार बनाकर मर्ज करना सही नहीं रहेगा।

बहरहाल, विपक्षी दलों ने जिस प्रकार सदन के भीतर और बाहर भूमि अधिग्रहण संशोधन विधेयक को लेकर सरकार को घेरा और उससे उबरने के लिए सत्तापक्ष ने भी एक दांव खेला और सत्ताधारी दल के विधायक धर्मांतरण मुद्दे को लेकर सदन के बाहर प्रदर्शन करने लेग। विधायकों ने हाथों में तख्तियां लेकर नारेबाजी की।

बीजेपी विधायक रामकुमार पाहन ने कहा कि धर्म परिवर्तन करने वाले लोगों को आरक्षण का लाभ नहीं मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट, केरल हाईकोर्ट और गुवाहाटी हाईकोर्ट ने स्पष्ट कहा है कि वैसे लोग जिन्होंने अपना धर्म बदल लिया है और जो आदिवासी संस्कृति और रीति-रिवाजों को नहीं मानते हैं उन्हें एसटी आरक्षण का लाभ नहीं मिलेगा।

बीजेपी की इस रणनीति पर विपक्ष ने कहा कि भूमि अधिग्रहण सहित कई मुद्दों पर घिरी सरकार को बचाने के लिए सत्ताधारी दल के विधायकों ने ये सियासी पैंतरा अपनाया है, और अपने प्रदर्शन के जरिए वे चाहते हैं कि विपक्ष के विरोध प्रदर्शन को कमजोर किया जाए।

इन सब के बीच सूबे में कानून व्यवस्था के मुद्दे पर रघुवर सरकार उस समय कटघरे में खड़ी दिखाई देने लगी जब विधानसभा में बीजेपी के सचेतक अनंत कुमार ओझा को धमकी देने का मामला सामने आया। ओझा ने कहा उन्हें फोन करके पिछले कुछ दिनों से धमकियां दी जा रही हैं। उन्होंने कहा कि मैसेज में भी उन्हें भद्दे शब्द और गालियां भेजी जा रही हैं। उन्हें नेस्तनाबूद करने की बात कही जा रही है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि इस मामले को लेकर जिले के एसपी को भी सारी जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि मेरे परिवार के अन्य लोगों को मारने की धमकी दी जा रही है। राज्य सरकार से मामले में उन्होंने कार्रवाई करने की अपील की।

बहरहाल, इस मामले को लेकर नेता प्रतिपक्ष हेमंत सोरेन ने एक बार फिर सरकार को आड़े -हाथों लिया। उन्होंने कहा ये बहुत ही गंभीर मामला है। आज बीजेपी के पंचायत अध्यक्ष तक को सिक्योरिटी मिली है। वहीं सत्ताधारी दल के विधायक खुद को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। इससे बड़ी शर्म की बात इस सरकार के लिए कुछ भी नहीं हो सकती। कुछ दिन पहले भी एक बीजेपी के कार्यकर्ता की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। उन्होंने सरकार की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए कहा कि आज पता ही नहीं चल रहा है कि सरकार काम क्या कर रही है, सिर्फ जुमलेबाजी, बयानबाजी से काम नहीं चलने वाला। जानकारी के अनुसार बीजेपी विधायक ओझा साहिबगंज जिले के राजमहल विधानसभा इलाके से विधायक हैं और कई वर्षों से बांग्लादेशी घुसपैठ के मामले को लेकर आंदोलन करते आ रहे हैं।

सत्र के अंतिम दिन उस समय राजनीति गरमा गई जब झाविमो नेता प्रदीप यादव ने मुख्यमंत्री के खिलाफ आरोप लगा दिया कि सदन में मुख्यमंत्री ने उन्हें धमकी देते हुए कहा कि उन्हें जेल भेजवा देंगे। उन्होंने कहा कि इसके लिए मुख्यमंत्री को माफी मांगनी चाहिए। हांलाकि इस पर बाद में सफाई देते हुए संसदीय कार्य मंत्री नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि मुख्यमंत्री ने ऐसा कुछ भी नहीं कहा है।

वहीं दूसरी ओर सत्तापक्ष की ओर से बीजेपी विधायक बिरंची नारायण ने बाबूलाल मरांडी के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का प्रस्ताव लाया।

दिनेश उरांव ने कहा कि जिस प्रकार सदन का कीमती वक्त बर्बाद हुआ यह संसदीय लोकतंत्र के लिए अच्छी बात नहीं है। जनहित के मुद्दे पर सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों के सदस्यों को समान रूप से संवेदनशील होना चाहिए।

विधायक ने कहा कि बाबूलाल मरांडी ने जानबूझकर विधायकों के चरित्र हनन का अमर्यादित प्रयास किया है।

विधानसभा अध्यक्ष दिनेश उरांव सदन की कार्यवाही बाधित रहने की वजह से नाराज दिखे। मंत्री सीपी सिंह ने जब सवाल उठाया कि सदन में किस नियमावली के तहत स्कूलों के मर्जर पर चर्चा हो रही है। यह प्रश्नकाल का समय है, इस पर दिनेश उरांव ने कहा कि यह कुर्सी मेरी जागीर नहीं है, आपने सर्वसम्मति से मुझे जिम्मेवारी दी है, सदन में मुद्दों पर बात नहीं हो रही है। कोई ऐसी बात कर रहा है जिससे पूरा सदन अव्यवस्थित हो जाता है। व्यर्थ का समय खत्म किया जा रहा है। इस सदन को सवा तीन करोड़ जनता देख रही है। मैं चाहता हूं कि जनता देखे, मेरी भूमिका भी देखे। हम कहां खड़े हैं, ये उन्हें पता चलना चाहिए। आने वाले चुनाव में जनता अपना निर्णय देगी। जनता पंच परमेश्वर है।

दिनेश उरांव ने कहा कि जिस प्रकार सदन का कीमती वक्त बर्बाद हुआ यह संसदीय लोकतंत्र के लिए अच्छी बात नहीं है। जनहित के मुद्दे पर सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों के सदस्यों को समान रूप से संवेदनशील होना चाहिए। इस सत्र में मैंने संवेदनशीलता का अभाव देखा। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि मैं बहुत दुखी मन से आज इन सारे तथ्यों का आज उल्लेख कर रहा हूं मेरी पीड़ा को सामूहिक पीड़ा के रूप में सभी सदस्य ग्रहण करें।

बहरहाल, विधानसभा का मानसून सत्र भी हंगामे की भेंट चढ़ गया। छह दिनों के सत्र में प्रश्नकाल नहीं चला। जनता के सवाल नहीं आये। व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप में ही विधायकों ने समय गुजार दिए, मुद्दों और समस्याओं पर बहस नहीं हो सकी। अमर्यादित भाषा, टीका-टीप्पणी को लेकर सत्तापक्ष और विपक्ष हंगामा करता रहा।

धनबाद का चर्चित नीरज सिंह मर्डर केस

धनबाद कोयलांचल में राजनीतिक हत्याओं का लम्बा इतिहास रहा है. वर्चस्व के लिए कई बार धनबाद रक्तरंजित हुआ है लेकिन कांग्रेस नेता नीरज सिंह की हत्या के बाद शुरुआत से ही जिस तरह झरिया विधायक संजीव सिंह को इस केस में घेरने की कोशिश हुई, वह पुलिस थ्योरी किसी को पच नहीं रही. राजनीति गुरु ने कई एक्सपर्ट्स के साथ इस काण्ड में अब तक की पुलिस जांच को समझने की कोशिश की है, और यह समझने की भी कोशिश की है कि क्या लोकप्रिय झरिया विधायक संजीव सिंह को इस मामले में फंसाया जा रहा है !

उमेश हेलीवाल

विधायक को अपराधी साबित करने की जल्दबाजी आखिर क्यों !

एफआईआर और पुलिस अनुसंधान अलग-अलग दिशा में जा रहे !

नीरज सिंह मर्डर केस में अभिषेक सिंह ने 23 मार्च 2017 को एफआईआर दर्ज कराया था, प्राथमिकी संख्या 48/ 17 में उन्होंने कहा है कि झरिया विधायक संजीव सिंह के कहने पर गया सिंह और महंथ पांडे ने नीरज सिंह की गाड़ी पर अंधाधुंध फायरिंग की गयी, जिसमें कांग्रेस नेता नीरज सिंह समेत अन्य लोगों की मौत हो गयी. प्राथमिकी में अभिषेक सिंह ने यह भी कहा है कि नीरज सिंह की गाड़ी में सवार आदित्य राज के द्वारा सूचना देने पर जब वो घटनास्थल स्टील गेट की ओर जा रहे थे तो उन्होंने रास्ते में पिंटू सिंह को बाइक चलाते हुए देखा, जिसके पीछे झरिया विधायक संजीव सिंह भी बैठे थे.

संजीव सिंह के हाथ में बड़ी सी बंदूक थी, जिसका आधा उन्होंने छिपा रखा था. उतनी भीड़ भरी जगह पर संजीव सिंह ने गाड़ी में सवार प्राथमिकीकर्ता अभिषेक सिंह से कहा कि मैंने तुम्हारे भाई को मार दिया है अब तुमलोगों की बारी है. (यहां यह जानना दिलचस्प है कि जिस जगह की बात हो रही है, वहां इतनी भीड़ होती है कि पैदल चलना भी मुश्किल होता है, ऐसी जगह एक विधायक जिसपर खुद सुरक्षा का खतरा है, जिसे 12 गार्ड्स मिले हुए हैं, वो बाइक पर घर से बाहर जा रहे थे, बिना सुरक्षाकर्मी के) .

खैर एफआईआर के इन पहलुओं पर किसी का भी ध्यान जाता, लेकिन अनुसंधानकर्ताओं का ध्यान पता नहीं इसपर क्यों नहीं गया. मात्र 4 गार्ड्स से इस सिलसिले में पूछताछ की गयी, सभी ने इसे गलत बताया, जबकि विधायक के सभी 12 गार्ड्स और पूर्व विधायक कुंती सिंह को मिले 4 हाउस गार्ड्स से भी पूछताछ की जानी चाहिए. अगर सुरक्षाकर्मी विधायक के साथ सचमुच नहीं थे तो इन सभी को आखिर निलंबित क्यों नहीं किया गया.

बहरहाल पुलिस इंस्पेक्टर निरंजन तिवारी ने अनुसंधान के बाद जो आरोप पत्र समर्पित किया है, उसमें एफआईआर की पूरी थ्योरी ही गलत साबित हो जाती है. अनुसंधानकर्ता पूरी तरह बाहरी शूटरों द्वारा हत्या करने की थ्योरी पर आ जाते हैं. शूटरों द्वारा प्रयुक्त बाइक्स भी गोविंदपुर के पास से जब्त कर ली जाती है. एक शूटर गिरफ्तार भी हो जाता है. अब विधायक घटनास्थल पर नहीं होते हैं, वो शूटरों वाला प्लान बनाने के साजिशकर्ता के तौर पर उभरते हैं. ऐसे में प्रश्न उठता है कि सच क्या है ! सभी लोग जानना चाहते हैं कि झूठ कौन बोल रहा है और क्यों ! झरिया विधायक को अपराधी साबित करने की जल्दीबाजी आखिर क्यों है पुलिस को.

घटना के बाद धनबाद पहुंचे सीआईडी के एडीजी अजय कुमार सिंह किस निष्कर्ष पर पहुंचे थे. उनके द्वारा विशेष जांच दल का गठन किया गया था, क्या थी एसआईटी की रिपोर्ट ! कहाँ है वो रिपोर्ट ! अचानक से एसआईटी की जांच ठन्डे बस्ते में क्यों चली गयी ! ऐसे कई प्रश्न हैं जो इस मर्डर मिस्ट्री में उच्चस्तरीय साजिश की ओर इशारा कर रहे हैं. आखिर कौन प्रभावशाली लोग हैं जो झरिया विधायक संजीव सिंह की बढती लोकप्रियता से घबरा गए हैं और उन्हें कानूनी पचड़े में फंसाना चाहते हैं.

किसने बिछाई सियासी बिसात !

राजनीति सचमुच शह और मात का खेल है, कब राजा कौन ही गोटी पलट दे, पता नहीं होता. कोयलांचल के सियासत में भी कुछ ऐसा ही हो रहा है. एक लोकप्रिय भाजपा नेता जेल में है और बाहर पार्टी की फजीहत हो रही है

संजीव सिंह कोयलांचल भाजपा के सबसे लोकप्रिय चेहरा हैं. कई भाजपा नेता बताते हैं कि संजीव सिंह खुद झरिया के विधायक तो हैं ही साथ ही धनबाद, सिंदरी, बाघमारा और निरसा सीट पर भी इनका अच्छा खासा प्रभाव है. ऐसे में प्रदेश की भाजपा सरकार अपने ही विधायक की निष्पक्ष जांच क्यों नहीं कराती ! यह ऐसा प्रश्न है जिसका जवाब कोयलांचल के सभी भाजपा नेता और कार्यकर्ता जानना चाहते हैं.

अभी हाल ही में धनबाद में माडाकर्मियों ने हडताल की थी, पानी के लिए त्राहिमाम हो रहा था. नगर विकास विभाग के सचिव और धनबाद के विधायक से वार्ता के बाद भी हडताल नहीं टूटी, फिर जेल में बंद विधायक ने अपने मजदूर संगठन को आगे कर इस हडताल को खत्म कराया और आम लोगों को पीने का पानी नसीब हुआ. ये है एक लोकप्रिय नेता का प्रभाव.

लेकिन कौन लोग हैं जो संजीव की राह मुश्किल बना रहे हैं ! दरअसल सत्ता के शीर्ष पर बैठे कुछ लोगों को लगने लगा था कि यह युवा नेता आनेवाले दिनों में कोयलांचल से कईयों की सियासी छुट्टी कर देगा. इसलिए साजिशों की विसात बिछी. धनबाद की नगर सरकार के एक बड़े शख्स की भूमिका भी इस मामले में महत्वपूर्ण बताई जाती है, जिन्होंने रांची में बैठे अपने आका को गलत सूचनाएं दी.

भाजपा धनबाद नगर के एक अधिकारी कहते हैं कि अगर संजीव सिंह जेल में रहे तो भीतरघात से परेशान संगठन अगले चुनावों में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पायेगा. शायद भाजपा के बड़े नेता भी इस बात को समझें .

संपत्ति के लिए आज तक कोई केस नहीं पुलिस बता रही संपत्ति विवाद ...

आरोप : पुलिस अनुसंधान में संपत्ति विवाद की बात

फेक्टशीट : आज तक स्व सूर्यदेव सिंह, रामधीर सिंह, बच्चा सिंह और भाइयों में संपत्ति का बंटवारा हुआ ही नहीं है तो संजीव सिंह और नीरज सिंह में विवाद होने की बात ही नहीं उठती! आज तक धनबाद की किसी भी अदालत में इनके बीच के संपत्ति विवाद का कोई भी मामला नहीं है. यह पुलिस का जल्दबाजी भरा निष्कर्ष है जो किसी निर्दोष को दोषी साबित करने की मंशा से भरा है.

आरोप : नीरज सिंह की लोकप्रियता से असहज हो रहे थे विधायक !

फेक्टशीट : धनबाद पुलिस के जांच अधिकारी के पास नीरज सिंह की बढती लोकप्रियता मापने का कौन सा जादुई यंत्र है ! किसी भी राजनेता की लोकप्रियता चुनावों में जनता द्वारा उन्हें दिए गए वोटों से पता चलती है. विधानसभा चुनाव में झरिया में नीरज सिंह को लगभग 40000 वोट मिले थे, जबकि संजीव सिंह को लगभग 75000. नीरज सिंह से पहले सुरेश सिंह को कांग्रेस उम्मीदवार के तौर पर 49000 वोट मिले थे यानि नीरज सिंह को जहां 9000 लोगों ने कम वोट दिया वहीं भाजपा विधायक संजीव सिंह को तकरीबन 25000 ज्यादा लोगों ने अपना मत दिया.इससे सा×फ पता चलता है कि लोकप्रियता नीरज सिंह की नहीं बल्कि संजीव सिंह की बढ़ी .

ऐसे कई प्रश्न हैं जो यह बताते हैं कि पुलिस अधिकारियों का एक वर्ग भाजपा विधायक को जल्दीबाजी में अपराधी साबित करने पर तुला हुआ है, आखिर क्यों और किसके दवाब पर !

आरोप : रंजय सिंह की हत्या से क्षुब्ध विधायक ने बदला लेने के लिए हत्या की साजिश रची

फेक्टशीट : यहां भी पुलिस फिल्मी कहानी गढ़ रही है. ऐसा फिल्मों में होता था कि विलेन बदले के लिए ऐसी हत्याएं कराता है. पुलिस ने रंजय सिंह के आपराधिक रिकाड्र्स ठीक से नहीं खंगाले और ना ही उनके किससे और कैसे संबंध थे, इसका ही पता लगाया. आज के दौर में किसी का किसी पर नियंत्रण नहीं है, खुद कितने ही पुलिस अधिकारियों के बच्चे बड़े अपराधी बने हैं तो क्या उस पुलिस अधिकारी को बेटे के जुर्म के लिए सजा होनी चाहिए. यह आधार भी जल्दबाजी का ही निष्कर्ष है, इस हिसाब से तो झरिया विधानसभा की हर घटना के लिए विधायक को दोषी मान लेना चाहिए .

झारखंड सरकार के खिलाफ 'मुखिया विद्रोह'

आत्मदाह तक पहुंच गया मुखियों का आक्रोश

तापस पालित

सरकार की उदासीनता से क्षुब्ध मुखिया संघ के प्रदेश अध्यक्ष विकास कुमार महतो आत्मदाह को बाध्य हो जाते हैं, वो तो वक्त पर प्रशासन ने जबरन उन्हें आत्मदाह से रोक लिया अन्यथा प्रदेश में एक अलग किस्म का माहौल बन जाता। आखिर क्यों बनी ऐसी विस्फोटक परिस्थिति ! कौन है इसका जिम्मेवार !

उग्र हुए प्रदेश के मुखिया

विकास के पहले पायदान पर बैठी गांव की सरकार और झारखंड सरकार आमने- सामने है. प्रदेश के 4000 से अधिक मुखिया की आँखों में राज्य सरकार के खिलाफ रोष है, गांव की सरकार के प्रधान मुखिया आक्रोशित हैं, अपने अपमान और पीड़ा से परेशान झारखंड प्रदेश मुखिया संघ आंदोलन के जरिये अपने अधिकार की लड़ाई लड़ रहा हैं. राज्य में मुख्यमंत्री रघुवर दास सरकार लगातार मुखिया को लेकर आक्रामक हैं, हर बात पर प्रखंड के अधिकारियों की जगह मुखिया जेल भेजे जा रहे हैं. पंचायत में समानांतर समिति बनाकर चुने हुए प्रतिनिधियों के महत्व को कम किया जा रहा है. ऐसे में गांव की चुनी हुई इस सरकार को लगने लगा है कि जान-बूझकर उनके सम्मान से खिलवाड़ हो रहा है.

अपने आन्दोल के तहत मुखिया संघ कभी धरना - प्रदर्शन तो कभी आमरण अनशन और अंततः आत्मदाह की भी कोशिशें कर चुका है. इन्हें लगता है कि सरकार राज्य में मुखिया को उनके हक और अधिकार से उन्हें वंचित कर रही है. आश्चर्य की बात तो ये है कि झारखंड के करीब सौ महिला व पुरुष मुखिया कई दिनों से पर रांची में आमरण अनशन पर हैं, लेकिन इनकी सुध लेने कोई भी सरकारी प्रतिनिधि नही पहुंचा है. न ही इनके स्वास्थ जांच के लिए डॉक्टर को भेजा गया है.

सरकार की इस उदासीनता से क्षुब्ध मुखिया संघ के प्रदेश अध्यक्ष विकास कुमार महतो आत्मदाह को बाध्य हो जाते हैं, वो तो वक्त पर प्रशासन ने जबरन उन्हें आत्मदाह से रोक लिया अन्यथा प्रदेश में एक अलग किस्म का माहौल बन जाता. आखिर क्यों बनी ऐसी विस्फोटक परिस्थिति ! कौन है इसका जिम्मेवार !

क्यों है इनकी नाराजगी !

मुखिया संघ की पहली मांग है कि पंचायती राज नियमावली के विपरीत गठित की गयी ग्राम समिति/आदिवासी विकास समिति को तत्काल रद्द किया जाए. पंचायत प्रतिनिधियों के मानदेय में वृद्धि की जाये एवं उनके टीए-डीए का भुगतान किया जाये. त्रिस्तरीय पंचायत के सभी पंचायत प्रतिनिधियों का बीमा कराया जाये. पंचायत में चल रही सही प्रकार की विकास योजनाओं की जांच मुखिया करेंगे. विधवा/ वृद्ध/ विकलांग पेंशन की भी नियमित रूप से जांच हो एवं लंबित पेंशन का शीघ्र भुगतान करने पर सहमति बने. पंचायत के सभी कर्मियों की उपस्थिति बायोमेट्रिक द्वारा पंचायत सचिवालय में सुनिश्चित हो. सरकार द्वारा पंचायत को हस्तांतरित मामलों में सबंधित विभाग अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप कर पंचायत का समय नष्ट न करे . 14वें वित्त आयोग के दिशा-निर्देश के अनुसार पंचायत सचिवालय को जेई,एई और और कंप्यूटर ऑपरेटर उपलब्ध कराया जाये. सरकार के द्वारा समय-समय पर दिए गए दिशा निर्देशों को विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से मुखिया को अपडेट कराया जाये. महिला मुखिया को सुरक्षा प्रदान किया जाये . प्रधानमंत्री उज्वला योजना एवं राशन कार्ड में त्रुटि पूर्ण सूची में सुधार करने एवं पंचायत तथा पंचायत सचिवालय में सफाई करने की व्यवस्था हो , सरकार के सभी योजनाओं का सामाजिक अंकेक्षण हो, पंचायत के अधीन जो भी उद्योग चल रहा है, उनसे कर वसूली का अधिकार पंचायत को दिया जाए, आपदा प्रबंधन की राशि पंचायतों को उपलब्ध करायी जाए साथ ही झारखंड राज्य के वर्तमान में जितने भी मुखिया को पद से हटाया गया है, उन्हें अपने मान-सम्मान के साथ वापस पद पर आसीन किया जाए.

क्या कहते हैं प्रदेश मुखिया संघ के अध्यक्ष

झारखंड प्रदेश मुखिया संघ के अध्यक्ष विकास कुमार महतो अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहते हैं कि पूरे राज्य में 4402 मुखिया हैं. महिला मुखिया 2289 और पुरुष मुखिया की संख्या 2113 है. राज्य सरकार से जो सहयोग मिलना चाहिए, वो उनलोगों को नहीं मिल पाता है, इसके विपरीत सरकार अपनी विफलताओं का ठीकरा भी मुखिया के ऊपर ही फोड़ती है. मुखिया के ऊपर लगातार सरकार और प्रशासनिक महकमे के अधिकारी आक्रामक रहते हैं, किसी अन्य से किसी प्रकार की भी कोई चूक क्यों न हो, प्रताड़ित मुखिया ही होते हैं . इसके अलावे उन्हें हमेशा जेल भेजने की धमकी भी दी जाती हैं। यह अन्याय है , अगर सरकार सहयोग करे और मुखिया को उनका पूर्ण हक और अधिकार दे तो मुखिया ना सिर्फ अपने पंचायत बल्कि इसके साथ-साथ पूरे राज्य को चमकाने में सरकार के साथ खड़े दिखेंगे

विवादों के बयान बहादुर

सदन में जब विपक्ष द्वारा स्वामी अग्निवेश के साथ मारपीट करने का मुद्दा उठाया गया तो सीपी सिंह ने कहा ये पब्लिसिटी स्टंट है,स्वामी ने हमला स्वंय करवाया। स्वामी अग्निवेश पुराना फ्रॉड हैं। स्वामी का चोला ओढ़ समाज को बांटने का काम कर रहे हैं। अग्निवेश विदेशी फंड के सहारे भारत मे उन्माद फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इससे पहले वे अन्ना हजारे के आंदोलन में गये थे। वहां भी लात-जूता खाकर आये।

खूंटी गैंगरेप पर विपक्ष पर वार करते हुए कहा कि बलात्कारियों की दलाली करना बंद करो। सदन में विपक्ष को अफजल गैंग का सदस्य तक कह दिया। इस पर खूब तकरार हुआ। जब नेता प्रतिपक्ष हेमंत सोरेन ने उन्हें टोका और कहा कि सीपी सिंह बुजुर्ग नेता हैं उन्हें सदन में कोई भी बात गंभीरता से रखनी चाहिए, गलत आरोप नहीं लगाना चाहिए।

हेमंत के ऐसा कहते ही सीपी सिंह अपने सीट से खड़े हो जाते हैं और आपत्ति जताते हैं। सीपी सिंह कहते हैं कि गाली मत दीजिये। मैं जवान हूं। किसी जवान को बुजुर्ग नहीं कहना चाहिए। ये वाकये मानसून सत्र के दौरान हुए जब सीपी सिंह पूरे रंग में दिखे, विपक्ष पर पलटवार करते हुए दिखे। सदन में और बाहर भी सीपी सिंह की इस अदा के कुछ दीवाने थे तो कुछ विरोधी।

सीपी सिंह ने स्वामी अग्निवेश पर निशाना साधते हुए कहा कि पब्लिसिटी के लिए स्वामी अग्निवेश ने खुद पर हमला कराया। मैं स्वामी अग्निवेश को 40 साल से जानता हूं। हमला करने वाला भारतीय जनता युवा मोर्चा का था ही नहीं। स्वामी ने हमला स्वंय करवाया।

भूमि अधिग्रहण संशोधन विधेयक सहित अन्य मुद्दों को लेकर झारखण्ड विधानसभा के मानसून सत्र भले ही बाधित हो रहा है लेकिन सरकार के कैबिनेट मंत्री सीपी सिंह अपने विवादित बयानों की वजह से खूब सुर्खियां बटोरी। उनके बयानों से विपक्ष और सत्ताधारी दल के बीच नोकझोंक के साथ ही जमकर ठहाके भी लगे तो कई बार स्थिति कुछ ज्यादा ही खराब होती दिखाई दी।

ऐसा ही नजारा सदन में उस समय देखने को मिला जब नेता प्रतिपक्ष हेमंत सोरेन ने सीपी सिंह को विपक्ष को अफजल गैंग का सदस्य बताए जाने का मामला उठाया और कहा कि सीपी सिंह बुजुर्ग नेता हैं उन्हें सदन में कोई भी बात गंभीरता से रखनी चाहिए, गलत आरोप नहीं लगाना चाहिए।

हेमंत के ऐसा कहते ही सीपी सिंह ने अपने सीट से खड़े हो गए और आपत्ति जताई। सीपी सिंह ने कहा कि गाली मत दीजिये। मैं जवान हूं। किसी जवान को बुजुर्ग नहीं कहना चाहिए।

बता दें कि एक दिन पहले सदन में कार्यवाही के दौरान मंत्री सीपी सिंह ने कहा था कि विधायक सुखदेव भगत को छोड़कर हेमंत सोरेन से लेकर प्रदीप यादव तक ये सारे लोग अफजल गैंग के सदस्य की तरह व्यवहार कर रहे हैं। उनके इतना कहते ही विपक्षी दलों के सारे विधायकों ने उनके इस बयान को लेकर काफी हंगामा किया था। झामुमो विधायकों ने मंत्री सिंह के द्वारा उन्हें देशद्रोही कहने पर अपनी आपत्ति दर्ज कराई थी। झामुमो के विधायक स्टीफन मरांडी ने कहा कि इस मामले में मंत्री को माफी मांगनी चाहिए।

स्टीफन मरांडी ने कहा कि उन्हें अफजल गैंग के सदस्य और देशद्रोही बताया गया। वहीं इस पर नेता प्रतिपक्ष हेमंत सोरेन ने भी कहा कि अखबारों में यह बात बड़ी प्रमुखता से छपी है।

इस पर मंत्री सीपी सिंह ने कहा कि न तो वे आखबार मालिक हैं और न ही संपादक, इसलिए अखबारों में छपी खबरों के लिए वे जिम्मेदार नहीं हैं।

बहरहाल, ये पूरा मामला तब उठा जब पाकुड़ में स्वामी अग्निवेश पर हुए हमले पर सीपी सिंह का बयान सामने आया जब सदन में ही विपक्ष द्वारा स्वामी अग्निवेश के साथ मारपीट करने का मुद्दा उठाया गया। इस मामले पर बोलते हुए सीपी सिंह ने कहा था कि पब्लिसिटी के लिए स्वामी अग्निवेश ने खुद पर हमला कराया। उन्होंने कहा, मैं स्वामी अग्निवेश को 40 साल से जानता हूं। हमला करने वाला भारतीय जनता युवा मोर्चा का था ही नहीं। स्वामी ने हमला स्वंय करवाया। उसने अपने ऊपर लात-जूता घूसा करवाया। सीपी सिंह ने कहा कि स्वामी अग्निवेश पुराना फ्रॉड हैं। अग्निवेश स्वामी का चोला ओढ़ समाज को बांटने का काम कर रहे हैं। अग्निवेश विदेशी फंड के सहारे भारत मे उन्माद फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इससे पहले वे अन्ना हजारे के आंदोलन में गये थे। वहां भी लात-जूता खाकर आये।

इसी बीच उन्होंने विपक्ष पर एक और आरोप लगाया और खूंटी गैंगरेप का जिक्र करते हुए कहा कि हमारे मंत्री नील कंठ सिंह मुंडा ने पांच महिलाओं के साथ हुए रेप का जिक्र किया लेकिन विपक्ष ने इसपर कुछ भी नहीं कहा। सीपी सिंह ने विपक्ष पर जोरदार हमला बोला और कहा कि बलात्कारियों की दलाली करना बंद करो। उन्होंने कहा कि विपक्ष एक साथ उस पादरी को बचाने के लिए राज्यपाल के पास पहुंच गया। जिसने बच्चियों को बचाने का कोई प्रयास नहीं किया उलटा उन्हें अपाराधियों के साथ जाने को मजबूर कर दिया।

इन सब आरोप- प्रत्यारोप के बीच सदन का मानसून सत्र का ज्यादा समय हंगामे की भेंट चढ़ गया। अंतिम दिन सदन में उस समय विवाद पैदा हो गया जब प्रश्नकाल के दौरान मंत्री सीपी सिंह ने आसन पर ही संचालन के तौर-तरीके को लेकर सवाल खड़े कर दिए। इसके साथ ही उन्होंने अपने विधानसभा अध्यक्ष के कार्यकाल की बातें भी सदन में रखी।

सीपी सिंह ने कहा कि करीब साढ़े तीन साल मैंने भी सदन चलाया है और मैं प्रक्रिया और कार्य संचालन नियमावली के अर्थ को बखूबी समझता हूं। उनकी आपत्ति इस बात पर थी कि प्रश्नकाल के दौरान विपक्ष द्वारा स्कूलों के मर्जर को लेकर उठाए गए सवाल पर सरकार से जवाब लेने का कोई औचित्य नहीं था।

सीपी सिंह ने इस पर सवाल उठाते हुए कहा, क्या मामला आम जन से जुड़ा हुआ है? प्रश्नकाल के बजाय इस पर दूसरी पाली में बस कराया जाना बेहतर होता।

विधानसभा अध्यक्ष डॉक्टर दिनेश उरांव ने भी सीपी सिंह के बयान पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि सदन चलाना मेरी जागीरदारी नहीं है। मैं भी नियम, कानून जानता हूं। उन्होंने कहा कि यहां कोई भी नियम फॉलो नहीं हो रहा है, जिसे जनता देख रही है।

इससे पहले सरकार में मंत्री मंत्री अमर बाउरी ने भी कुछ टिप्पणी की थी जिस पर स्पीकर ने नाराज होते हुए कहा था कि अगर हम बोलने लगेंगे तो दिक्कत हो जाएगा। तब अमर बाउरी ने खेद प्रकट किया।

मुजफ्फरपुर बालिका सुधार गृह में वहशीपन का अंधेरा

वो कराहती रही, सत्ता सुनती रही

प्रणव

एक राक्षस की कहानी पूरे सिस्टम को झकझोरने वाली है. पहले अखबार निकालने वाले लोग समाज को नयी दिशा देते थे. पर प्रात: कमल के इस संचालक ने तो पत्रकारों के चेहरे पर ऐसी कालिख मल दी जो शायद कभी नहीं छूटे! पर दरिंदगी के इस खेल में ब्रजेश ठाकुर अकेला नहीं था ! बिहार झारखंड के 250 अधिकारी और नेताओं का नम्बर उसके पास से बरामद होना बहुत कुछ कह जाता है . इन सबसे व्हाट्स एप पर बात हो रही थी. इस नापाक रैकेट का पर्दाफाश होना ही चाहिए. बेसहारा बच्चियों को न्याय मिलना ही चाहिए...उन्हें जिन्दगी देने के लिए कसूरवारों को बेहद कड़ी सजा मिलनी चाहिये ...

प्रातः कमल अखबार का बोर्ड . नाम इतना पवित्र सा ...लेकिन नाम के ठीक उलट यहां के बालिका सुधार गृह में हर रात बेवश बच्चियों की चीख गूंजती थी, उनकी कराहों से आसमान का भी कलेजा फटता था, हर दिन लोग इसे सुनते थे, सत्ता के जिम्मेवार लोग भी इन निराश्रित लडकियों की कराहें सुनते थे लेकिन सबने जैसे मुंह सिल रखा था. टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टिस) ने जब अपनी रिपोर्ट में लिखा कि इस बालिका सुधार गृह को यौन शोषण गृह बना दिया गया है. रोज इन बच्चियों का गैंग रेप हो रहा है तो बवंडर मचा. तीन महीने बाद मुख्यमंत्री का मौन टूटा, मामला सीबीआई को सौंपा गया, कुछ अधिकारियों का निलंबन हुआ लेकिन क्या बात इतनी सी है !

मुजफ्फरपुर के मीडिया माफिया ब्रजेश ठाकुर की संस्था को बालिका सुधार गृह का काम समाज कल्याण विभाग ने करोड़ों में दिया था. दबे मुंह ब्रजेश ठाकुर के कुकृत्यों की चर्चा तो पिछले एक दशक से हो रही थी, पर बिल्ली के गले में घंटी बांधने का साहस किसी के पास नहीं था। अब जब सुप्रीम कोर्ट ने खुद से इस मामले को संज्ञान में ले लिया है तो कुछ उम्मीद बंधी है . मीडिया पॉवर, नेताओं की हवस, जाति में लिपटा हुआ सामंतवाद और कुछ एनजीओ के मिले जुले रैकेट

ने मासूम बच्चियों को मसल कर रख दिया है।

विपक्ष के बयानों से घिर चुके नीतीश ने मामला सीबीआई को सौंपा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. यौन पिपाशुओं का यह घृणित कारोबार मुजफ्फरपुर की सीमाएं लांघकर कई जिलों में पहुंच चुका था. जिस भी बच्ची ने विरोध किया उसे गायब करने का पूरा समय रैकेट चलानेवालों को मिल चुका था. यह भी कहा जा रहा है कि देर सबेर मंत्री मंजू वर्मा की विदाई होनी भी तय है, साथ ही इस मामले में भाजपा के कुछ स्थानीय सूरमा भी फंस सकते हैं।

आखिरकार सबकी जड़ में राजनीति ही तो है।

सीबीआई जांच पर भी एक बड़ा तबका सवाल उठा रहा है. नवरूना हत्याकांड का उदाहरण सामने ही है। इस मामले में नेताओं-अफसरों की कृपा की चर्चा दिल्ली से पटना तक हो रही है . जांच अभी आरंभिक दौर में है. लेकिन चर्चा का बाजार गर्म है. पटना से लेकर दिल्ली तक जातियों के नेता न्याय के साथ राहत की गुहार भी लगा रहे हैं. क्योंकि, यह सभी को पता है कि जिस दिन ब्रजेश ठाकुर का मुंह खुलेगा तो कई का भाग्य झटके में दुर्भाग्य में बदल जाएगा. कहा तो यह भी जा रहा है कि अफसरों की भी बड़ी कृपा रहती थी ब्रजेश ठाकुर पर। सब कुछ अब सीबीआई और ब्रजेश के हाथों में है.

यदि ब्रजेश अपना मुंह खोलता है तो सीबीआई के लिए बड़ी सफलता होगी. ऐसे में ब्रजेश पर जेल में जानलेवा हमला भी हो सकता है. कहा तो यह भी जा रहा है कि मुजफ्फरपुर में एक खास जाति की पंचायत इस मामले पर गुप्त रूप से बैठी थी, जिसमें आरोपी की मन की बात जान ली गई है. झिड़की भी दी गई कि इतना नीचे गिरने की क्या आवश्यकता थी! इसके बाद बचाव की रणनीति भी बना ली गई है. दूसरी ओर जड़ में वोट बैंक है. संदेश दे दिया गया है कि यदि पूरे उत्तर बिहार में हमारा वोट चाहिए तो कुछ भी होना नहीं चाहिए. हालांकि, अबतक आश्वासन नहीं मिला है और समय का इंतजार किया जा रहा है. यदि ऐसा हुआ तो सीबीआई कितनी कारगर हो सकेगी, कहना कठिन है.

ब्रजेश ठाकुर ने नेताओं-अफसरों की सीडी भी बनवा रखी है

सूत्रों के मुताबिक ब्रजेश ठाकुर को इस बात का एहसास था कि एक न एक दिन चोरी पकड़ी जाएगी. ऐसे में उसने अपने बचाव का जुगाड़ भी कर रखा है। उसने कुछ सीडी बनवा कर रखा है। जिसमें कई सफेदपोश नंगे हो सकते हैं. उनकी राजनीति खत्म हो सकती है। इसमें अफसरों के नाम की भी चर्चा है, जो पहले मुजफ्फरपुर में पदस्थापित रह चुके हैं. ब्रजेश अपने साम्राज्य को बचाने के लिए इन सभी का इस्तेमाल करेगा ही, क्योंकि उसे पता है कि वह दलदल में है और तभी निकलेगा, जब कोई हाथ उसे थामेगा. चुनावों का मौसम आनेवाला है तो जाहिर सी बात है कि साफ-सुथरे नीतीश पर अपना दामन बचाने की चुनौती होगी। भाजपा भी चाहेगी कि कुछ छुटभैयों की बलि देकर मामले को लंबा खींचा जाए। 2005 के पहले तो राजद का ही शासन था. ऐसा हुआ तो फिर सब कुछ भगवान भरोसे ही मानिए। यदि जांच का दायरा 2005 के पहले पहुंचा तब तो इस मामले में कुछ भी अनुमान लगाना बेहद मुश्किल हो जाएगा.

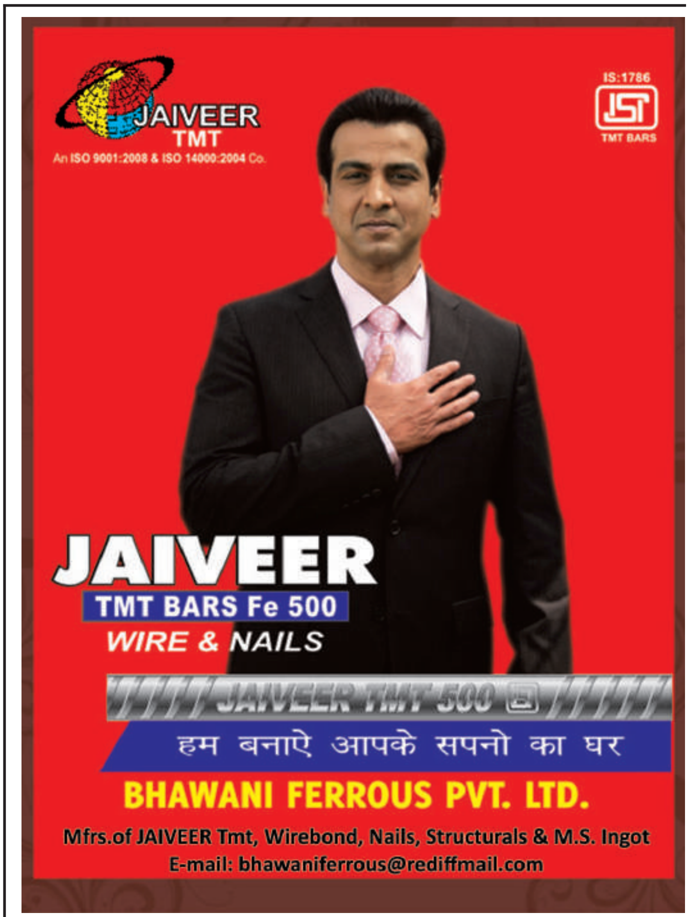

नीतीश जी आप तो ऐसे नहीं थे !

राघवेंद्र

नीतीश जी, मुजफ्फरपुर कांड हर तरफ गूंज रहा है. पूरे देश में इसको लेकर बिहार की थू -थू हो रही है. आपने जिस तरह बिहार की नयी ब्रांड इमेज गढ़ने की कोशिश की थी, वो एक झटके से बिखर गयी है. हर बड़ी घटना में आप एक्शन इनिशिएट करते थे. अपराधी चाहे आपके दल का ही क्यों न हो, उसे सज़ा मिलती थी, लेकिन इस बार आप खामोश रहे, लड़खड़ाते रहे. जांच रिपोर्ट के 2 महीने बाद आपका मौन टूटा. उन विवश बच्चियों की सिसकियां भी शायद आपको इतने दिन सुनाई नहीं पड़ रही थी. सरकार की सुरक्षा में रह रही परेशान बच्चियों की हिफाजत करना आपका राजधर्म था.

हिफाजत तो छोड़िये...उनसे बार-बार बलात्कार किया गया, जिस बच्ची ने विरोध किया उसे हमेशा के लिए सुला दिया गया. कौन हैं ये बलात्कारी ! साधारण आदमी तो निश्चित तौर पर नहीं. वहां विभाग के अधिकारी, मंत्री सभी गिद्ध भोज करते थे. आपके मंत्री पति का नाम खुले तौर पर आया. एक भाजपा मंत्री का नाम खुले तौर पर आ रहा है.

खुद दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा. कई बड़े अधिकारियों का नाम सामने आ रहा है लेकिन ऐसा लगता है, जैसे बार बार जांच की दिशा भटकाने की कोशिश बड़े स्तर पर हो रही है.

आप राजनीति में मर्यादा के लिए जाने जाते थे. इसलिए बिहार के आम लोगों ने आपके नेतृत्व में पिछले दो दशक से भरोसा जताया, पर आप इतने लाचार दिखेंगे, इसकी किसी ने उम्मीद नहीं की थी, अब भी जागिये नहीं तो पीड़ित बेटियों की सिसकियां आपको निगल जाएंगी. यौन उत्पीड़न झेलते झेलते कई लड़कियां पागल हो चुकी हैं. काश ! आप इन बेटियों की पीड़ा, उनकी दुर्दशा का थोडा भी दर्द महसूस कर

> **अब जबकि समाज कल्याण मंत्री मंजू वर्मा का इस्तीफा हो चुका है, असली अपराधियों के गठजोड़ का परदाफाश होना चाहिए**

पाते . आप ने पहली बार बिहार के लोगों को निराश किया है. अब बिहार के आपके शुभचिंतक भी आप पर शर्म करेंगे .

आपकी पूर्व मंत्री टीवी पर गला फाड़कर कह रही थी कि वो कुशवाहा हैं, इसलिए उनपर आरोप लगाये जा रहे हैं. आपको उनसे पूछना चाहिए था कि जिन बेटियों के साथ सामूहिक दुष्कर्म हुए, उन सबों की क्या जाति थी ! उनकी एक ही जाति थी... लाचारी .... मंत्री के पति आखिर किसकी जाति पूछने इस बालिका गृह में पहुंचे थे और किस हैसियत से. मुजफ्फरपुर की पुलिस आरोपियों के निकट पहुंच चुकी थी. सीबीआई को भी मामला आपने इसलिए सौंपा क्योंकि अगले ही दिन हाई कोर्ट ऐसा करने वाला था. अब आप बेटियों की दुर्दशा पर राजनीति कर रहे हैं. संजय झा के रिश्तेदार का सच क्या है ! जनता जानना चाहती है. अन्य जिलों का सच भी सामने आना चाहिए.

अभी भी वक्त है, इतना नीचे मत गिरिये, अन्यथा बिहार का कोई भी समाज आपको माफ नहीं करेगा. हर जिले के ऐसे केन्द्रों की जांच करिये. दोषियों को कड़ी सजा दिलवाईये. पीड़ित लड़कियों के साथ इन्साफ कीजिये. अभी जब आपका मौन टूटा तो कई अधिकारियों पर कार्रवाई हुई, लेकिन क्या इतना काफी है ! कानून का राज स्थापित करिए, जिसकी दुहाई आप हमेशा देते हैं . ब्रजेश ठाकुर जैसे लोगों के इस भ्रम को तोड़िये कि वो गरीब और लाचार बेटियों का गिद्धभोज करते रहेंगे और पॉवर के बल पर बचे रहेंगे ! इस मामले में राजनीति नहीं इंसानी संवेदनशीलता दिखाईये.

एक गोली ने खोली बिहारी डी-कंपनी की पोल

शिवहर से संगीता तिवारी

उत्तर बिहार की जेलें माफियाओं के लिए सुरक्षित मांद बनती जा रही है। खुफिया विभाग ने भी यह मान लिया है कि सीतामढ़ी, दरभंगा और शिवहर जेलों के बीच लगातार संदेशों का आदान-प्रदान हो रहा है। यह किस तरह से हो रहा है, यह जांच का विषय है। मोबाइल फोन से लेकर पत्रों तक के जरिये यह सब होता है। अबतक जो सूचनाएँ मिली हैं, उसके मुताबिक मुकेश और संतोष की लड़ाई लेवी के रुपयों की खातिर है। संतोष झा ही लेवी की राशि रखता था और उसे नेपाल में अपने दो संबंधियों के मार्फत निवेश करता है। गैंग के अन्य लोगों को भी वह कुछ राशि देता था, लेकिन मोटा हिस्सा अपने ही पास रखता है।

कोर्ट कैंपस में गोली चली। पेशी पर लाया गया एक आरोपी मारा गया। बिहार सरकार का गृह विभाग एकदम से चौकस हो गया और पुलिस के साथ-साथ खुफिया एजेंसियों को जांच पर लगा दिया गया। सबकुछ काफी गुप्त रूप से हुआ। जब पड़ताल के दौरान बातें पता चलीं तो सरकार के कान खड़े हो गए। उत्तर बिहार के मोतिहारी, शिवहर, सीतामढ़ी, दरभंगा के पुलिस कप्तानों को कड़े संदेश दिए गये। जाति आधारित अपराधी गिहोंहों ने डी-कंपनी की तर्ज पर चलने की तैयारी जो शुरू कर दी है। मोतिहारी जिले के ढ़ाका सब डिविजन में पेशी के लिए लाए गये आरोपी अभिषेक झा पर गोली चली । कथित तौर पर उसके ही साथियों ने उसे छुड़ाने के लिए जो गोलियां पुलिस पर चलाई, वह अभिषेक को लगी और मौके पर ही वह मारा गया। यह नाम कोई छोटा नहीं था, अपराध की दुनिया में लोग उसका नाम अदब के साथ लेते थे।

खुफिया विभाग की जांच में हुआ खुलासा

पहले नक्सली संगठन में एरिया कमांडर, फिर परशुराम सेना का गठन बाद में आजाद-हिंद-फौज नाम के अपराधी संगठन के गठन में अहम भूमिका निभा चुके संतोष झा का नाम इसमें सामने आया। फिर, पुलिस का फोकस दरभंगा के इंजीनियर हत्याकांड के साथ अन्य हत्याओं से चर्चित अपराधी व शूटर मुकेश पाठक पर गया।

फिर शक की सूई आजाद-हिंद-फौज पर आकर टिक गई। जैसे-जैसे पुलिस व खुफिया एजेंसियों की जांच आगे बढ़ी तो मामला कुछ और ही नजर आया, जो बेहद खौफनाक था।

दोस्त से दुश्मन बन चुके हैं मुकेश और संतोष कभी दोस्त रहे संतोष व मुकेश के बीच गैंगवार का यह नतीजा है। मुकेश कई मामलों में दोषी करार दिया जा चुका है और सीतामढ़ी जेल में सजा काट रहा है। दूसरी ओर संतोष झा भी सजायाफ्ता है और दरभंगा जेल में बंद है। असल जंग इऩ दोनों के बीच ही है। दोनों का याराना लगभग दस साल से था, जो अब दुश्मनी में बदल चुकी है। इस जंग में मुकेश बैकफुट पर है और संतोष का पलड़ा भारी है। अचरज तो इस बात से है कि दोनों ही जेल में बंद हैं और अपने गिरोह को ऑपरेट कर रहे हैं। पुलिस जहां सख्त है तो जेल प्रशासन की विशेष कृपा है दोनों पर।

खुफिया विभाग ने यह मान लिया है कि सीतामढ़ी, दरभंगा और शिवहर जेलों के बीच लगातार संदेशों का आदान-प्रदान हो रहा है। यह किस तरह से हो रहा है, यह जांच का विषय है। मोबाइल फोन से लेकर पत्रों तक के जरिये यह सब होता है। अबतक जो सूचनाएँ मिली हैं, उसके मुताबिक मुकेश और संतोष की लड़ाई लेवी के रुपयों की खातिर है। संतोष झा ही लेवी की राशि रखता था और उसे नेपाल में अपने दो संबंधियों के मार्फत निवेश करता है। गैंग के अन्य लोगों को भी वह कुछ राशि देता था, लेकिन मोटा हिस्सा अपने ही पास रखता है।

मुकेश गैंग का कहना है कि उसे आधा हिस्सा चाहिए। यह बात संतोष को मंजूर नहीं। जब दोनों साथ थे तो गैंग काफी ताकतवर होता था। उसके पास हथियारों से लेकर नए-नए शूटर भी आते रहते थे, जिनका कोई पुलिस रेकार्ड नहीं होता था। बाद में आपसी लड़ाई व मनमुटाव की वजह से एक के बाद एक छापेमारियां हुईं और गिरोह के हथियार पकड़े गए। ऐसे में रुपयों की जरुरत हुई, ताकि नए हथियार खरीदे जा सकें। यहीं पर, मनमुटाव शुरू हुआ। मुकेश पाठक गैंग के चलाने के तरीकों से नाराज था और चाहता था कि संतोष उसे पूरी छूट दे और साथ में अकूत रुपया भी। डी-कंपनी की तरह गैंग चलाना चाहता है मुकेश मुकेश बंबईया डी-कंपनी की तरह गिरोह का पुनर्गठन करना चाहता था। जिसमें नेपाल के अपराधियों की भी भूमिका होनी थी। कहा जाता है कि दरभंगा के इंजीनियर हत्याकांड के बाद मुकेश पाठक कुछ दिन नेपाल-चीन सीमा पर और म्यांमार में भी छुपा बैठा था। जहां उसने अपने गिरोह के संचालन के तरीको को बदलता चाहा। वह चाहता है कि गिरोह में मासिक पेमेंट पर भर्तियां हो।

आधुनिक हथियार रखे जाएं। पकड़े जाने पर गैंग के मामलों की अदालती पैरवी के लिए अच्छे वकील रखे जाएं। जाहिर है कि इनके लिए काफी रुपयों की जरुरत थी। साथ ही वह जिलों के ठेकों और रेलवे के ठेकों को भी मैनेज करना चाहता है।

जब इऩ सब बातों की जानकारी संतोष झा गिरोह के अन्य सदस्यों को हुई तो ज्यादातर मुकेश का सपोर्ट करने लगे। संतोष को लगा कि वह अपने ही गैंग में अकेला हो गया है। ऐसे में वह आजाद-हिंद-फौज को अपने पाले में करने लगा और समय का इंतजार करने लगा। दूसरी ओर मुकेश पाठक के पास रुपये हैं नहीं कि वह गिरोह का चला सके। इन्हीं सब बातों को लेकर वह अभिषेक को भगाना चाहता था, ताकि वह बाहर रह कर लेवी वसूले और फिर बाकी इंतजामात हो सके।

मुकेश को राजनीति से प्रेम तो संतोष को रुपयों से दरअसल कहानी कुछ और भी है। मुकेश के मन में राजनीतिक महत्वाकांक्षा भी है। संतोष के मन में यह बात सीधे-सीधे नहीं है। जब मुकेश की इस इच्छा का पता स्थानीय नेताओं को चला तो वे सतर्क हो गए। क्योंकि आधे उत्तर बिहार में अभी अपराध की दुनिया में मुकेश-संतोष की ही चर्चा है। दोनों ही ब्राह्मण हैं। ऐसे में गैंगस्टर देवेंद्र दुबे के बाद पहली बार हुआ है कि इन जिलों में दो ब्राह्मण गैंगस्टरों का वर्चस्व बना। ज्यादातर युवा मुकेश से आकर्षित हैं तो मजबूरी में संतोष को एक अन्य जाति से संबंधित गैंग आजाद-हिंद-फौज से नाता जोड़ना पड़ा है। अन्य जातियों के अपराधियों को अपने आसपास जुटा कर संतोष ने अपने पलड़ा भारी कर लिया है। इस बात के भी कयास हैं कि सीतामढ़ी और दरभंगा जेल में दोनों पर जानलेवा हमला भी हो सकता है, जैसा यूपी के मुन्ना बजरंगी मामले में हुआ है।

दोनों ने ही इऩ जेलों में अपने समर्थकों को भी जुटा रखा है। इसी से बिहार पुलिस के कान खड़े हैं। यहां भी जड़ में राजनीति है और उससे उपजी महत्वाकांक्षा। ब्राह्मणवाद में लिपटी आपराधिक महत्वाकांक्षा ने नव-सामंतवाद से लैस अन्य जातियों को आपराधिक तौर पर एकजुट होने का मौका दे दिया है। दम तोड़ रहे नक्सलवाद को एकबार फिर से संतोष झा खड़ा करने की ताक में है। मुकेश पाठक सजातियों को एकजुट कर दूसरा देवेंद्र दुबे बनने की राह पर है और बीच में है नेता और उऩकी राजनीति। यदि मुकेश की चली तो सबकुछ हाइटेक हो जाएगा और उत्तर बिहार के कम से कम दस जिलों और नेपाल के कुछ जिलों में बिहारी डी-कंपनी अगले कुछ सालों में खड़ी हो जाएगी। संतोष की चली तो नक्सवाद की आड़ में लेवी वसूलने का सिलसिला मजबूत होगा। उसे नेताओं की सरपरस्ती भी हासिल हो जाएगी, क्योंकि उसका मकसद खौफ का साम्राज्य बनाना है, जिसमें खुद की राजनीति कही नहीं हो, बस रुपया ही रुपया हो।

राजनीति में बस चंदा ही देते रहे वैश्य

बिहार में वैश्यों की लगभग 40 उपजातियां हैं जो बिहार की आबादी में 27 प्रतिशत से अधिक है. यह समाज आर्थिक रूप से संपन्न होने के बावजूद आज भी राजनीति में अपने को उपेक्षित महसूस कर रहा है। वैश्य समाज के नाम पर राजनीति करने वाले कई संगठन बिहार में समाज के हितों के लिए लगातार प्रयासरत हैं, परंतु समाज के संगठन की राजनीति करने वालों के बीच आपसी तालमेल नहीं होने की वजह से आज भी यह समाज सभी राजनीतिक दलों के द्वारा वोट और नोट के रुप में इस्तेमाल होता आ रहा है।

हाल के वर्षों में बिहार की राजनीति में पुनः वैश्य समाज के कई गुटों के नेता अपनी डफली अपना राग अलापते हुए समाज को एकत्रित करने का दावा करते हुए आगामी चुनाव में वैश्य समाज के लिए संख्या बल के आधार पर चुनावी राजनीति में उचित हिस्सेदारी की मांग करते नजर आ रहे हैं। सभी राजनीतिक दल जानते हैं कि वैश्य समाज सभी तरह से संपन्न होने के बावजूद संगठित और एकत्रित नहीं है और न ही वैश्य समाज का कोई एक सर्वमान्य नेता है। इसी मुद्दे पर हमने अलग अलग वैशय सगठनों से उनके द्वारा किए जा रहे राजनीतिक प्रयासों के बारे में बातचीत की ।

> सभी राजनीतिक दल जानते हैं कि वैश्य समाज सभी तरह से संपन्न होने के बावजूद संगठित और एकत्रित नहीं है और न ही वैश्य समाज का कोई एक सर्वमान्य नेता है।

अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन बिहार इकाई के अध्यक्ष डॉ. प्रो. जगन्नाथ गुप्ता कहते हैं कि बिहार में वैश्य समाज की 40 उप जातियां हैं, जिसकी जनसंख्या बिहार की कुल आबादी का 27 प्रतिशत है, इसके बावजूद इस समाज की भागीदारी राजनीति में नगण्य है। सभी राजनीतिक दल वैश्यों का चुनाव के वक्त वोट और नोट के रूप में इस्तेमाल करते हैं और सत्ता में आने के बाद सबसे ज्यादा शोषण भी इसी समाज का किया जाता है। श्री गुप्ता ने कहा कि भाजपा जैसी पार्टी वैश्यों को अपना आधार वोट कहती है लेकिन इस पार्टी के द्वारा भी हमारी उपेक्षा की जा रही है. भाजपा वैश्य समाज के लोगों को कार्यकर्ता के अलावे नेता के रुप में देखना पसंद नहीं करती है। प्रो. गुप्ता का कहना है कि इसी सब उपेक्षा को देखकर मैं अपने संगठन अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के माध्यम से 40 उप जातियों में बटे इस समाज को एक मंच पर लाने का अथक प्रयास लगातार कर रहा हूं।

इसी को ध्यान में रखकर एक नेता, एक झंडा और एक नेतृत्व को लेकर बिहार में वैश्यों की चट्टानी एकता और राजनीतिक गोलबंदी के संदेश के साथ एक बड़ा सम्मेलन पटना के बापू सभागार में करने का निर्णय लिया गया है। श्री गुप्ता ने कहा कि निश्चित रुप से हाल के दिनों में वैश्यों का नेतृत्व उभरा है, जिसके परिणामस्वरुप वैश्यों की तरफ से यह मांग भी उठने लगी है कि 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में बिहार का मुख्यमंत्री भी वैश्य समाज के ही किसी नेता को बनाया जाय।

वैश्य समाज की उपजाति में ही तेली साहू समाज भी सम्मिलित है और इसके प्रदेश अध्यक्ष रणविजय साहू का कहना है कि बिहार में सिर्फ तेली समाज की जनसंख्या लगभग 80 लाख के करीब है, जो बिहार की कुल आबादी का 7 प्रतिशत है। इस समाज का अपना संविधान है जो किसी अन्य समाज में नहीं है। रणविजय कहते हैं कि तेली साहू समाज के संगठन को आगामी दिनों में और धारदार बनाते हुए इसे पंचायत से लेकर प्रदेश स्तर संगठित किया जायेगा। आजादी के बाद से ही इस जाति के लोगों को समाज के मुख्य धारा से अलग रखने किम साज़िश हुई है. सभी राजनीतिक दलों ने इस समाज का सिर्फ वोट बैंक के रुप में इस्तेमाल किया है, जबकि यह समाज दूसरों के कल्याण एवं मदद में भरोसा करता है। आगामी नवंबर माह में तेली अधिकार रैली का आयोजन पटना के गांधी मैदान में करने की योजना है, जिसमें साहू समाज राजनीति में अपने अधिकार का शंखनाद करेगा। इस समाज का एक भी प्रतिनिधि न तो लोकसभा और न ही राज्य सभा में है, आखिर इसके लिए जिम्मेवार कौन है ? इन्हीं सब मुद्दों को लेकर नवंबर माह में तेली साहू समाज के लोगों को पटना के गांधी मैदान में निर्णय लेने के लिए एकत्रित किया जायेगा। समाज के लोग इस सम्मेलन में यह निर्णय लेंगे कि आगामी लोकसभा चुनाव में पटना साहिब, सीतामढ़ी, मोतीहारी एवं शिवहर लोकसभा क्षेत्र से जो भी राजनीतिक दल उम्मीदवार देगा, यह समाज उसी दल को अपना वोट देगा।

बिहार महिला विकास मंच की वीणा मानवी का कहना है कि जबतक वैश्य समाज के सभी गुटों के कर्त्ता-धरता अपने दिल से मैं के अहम् को त्याग कर हम की राजनीति पर नहीं आयेंगे तबतक इस समाज को एक कर पाना किसी के बूते की बात नहीं है। श्री मानवी वैश्य समाज के कार्यक्रमों के अलावे सामाजिक सरोकार के कामों में अक्सर बढ-चढ़कर हिस्सा लेती रहती हैं। ये मानती हैं कि वैश्य समाज के नेता आपस में ही कई गुटों में बटे हुए हैं, जिसका फायदा सभी राजनीतिक पार्टी उठाते हैं। आर्थिक रुप से यह समाज सभी राजनीतिक दलों के लिए काफी मददगार रहने के बावजूद संगठित नहीं रहने की वजह से सभी दलों के द्वारा सिर्फ इस्तेमाल किया जाता रहा है। वैश्य समाज के इसी गुटबंदी को देखकर ये अभीतक किसी भी गुट में शामिल नहीं हुई हैं, जबकि इनकी कार्यकुशलता को देखकर कई राजनीतिक पार्टियों ने पार्टी में शामिल होने को कहा परंतु राजनीतिक पार्टी में शामिल न होकर अपने सामाजिक सरोकार के तहत आमजनों के हितार्थ सामाजिक कार्य करती रहती हैं।

राष्ट्रीय वैश्य महासभा (बिहार) के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष पी के चौधरी का कहना है कि राष्ट्रीय वैश्य महासभा विगत 40 वर्षों से वैश्य समाज के हितों के लिए लगातार कार्य कर रही है। इस सभा के संस्थापक प्रसिद्ध चिकित्सक और विधायक रह चुके डॉ दुखन राम थे। श्री चौधरी का कहना है कि वैश्य समाज की बिहार में कुल 56 उप जातियां हैं, जिसकी कुल आबादी बिहार की जनसंख्या में 22 प्रतिशत से अधिक है। यह समाज कई उप जातियों में विभक्त है, कुछ विभीषण इस समाज में हैं जो सभी उप जातियों को एक नहीं होने दे रहे हैं. भारतीय जनता पार्टी को बिहार में सबसे अधिक वैश्य समाज का ही वोट मिलता है, इसके बावजूद राजनीतिक रुप से यह समाज उचित प्रतिनिधित्व से कोसों दूर है। बिहार से वैश्य समाज के लोकसभा में दो सदस्य रहने के बावजूद किसी को भी केंद्र में मंत्री पद नहीं दिया गया जो भाजपा की राजनीतिक मनःस्थिति को स्पष्ट उजागर करता है। बिहार में जिस दिन वैश्य समाज की सभी उपजातियां एक हो जायेंगी उस दिन निश्चित तौर पर इस समाज के लोगों को राजनीतिक अधिकार मिल जायेगा । विगत 15 वर्षों से राष्ट्रीय वैश्य महासभा द्वारा वैश्य समाज के समस्याओं के निराकरण के लिए ''वैश्य कल्याण आयोग'' की मांग राज्य सरकार से की जाती रही है लेकिन अबतक कुछ नहीं हुआ . बिहार में वैश्य समाज को छोड़कर सभी के लिए आयोग का गठन हो चुका है फिर वैश्य समाज के लिए आयोग का गठन क्यों नहीं ?

साहेबगंज और पाकुड़ के क्रशर व्यवसायी सड़कों पर

विधायक समर्थन में प्रशासन विरोध में

संथाल परगना के छोटे क्रशर संचालक परेशान हैं. उनके क्रशर पर शासन जेसीबी चलवा रहा है. इससे भारी पैमाने पर स्थानीय मजदूर बेकार हो गए हैं. राजनीति गुरू ने अपने पिछले अंक में भी झारखंड के इन भूमिपुत्र क्रशर व्यवसाईयों की परेशानी को प्रमुखता से उठाया था. कुछ दिनों तक जिला प्रशासन की एकतरफा कार्रवाई रुकी भी लेकिन फिर क्रशर ढहाए जाने लगे. आखिर अपनी माटी के इन हजारों उद्यमियों के साथ ऐसा सलूक क्यों ! ऐसी बेरहमी क्यों ! विभाग और प्रदूषण नियंत्रण परिषद की नाकामी की सजा क्रशर मालिकों को क्यों! क्या ये कहीं बाहर से आये हैं या फिर स्थानीय लोगों की बेरोजगारी और पलायन से सिस्टम को कोई लेना देना नहीं. ऐसे कई सवाल हैं, जिसे लेकर साहेबगंज और पाकुड़ के हजारों लोग आंदोलित हैं. **रणजीत झा/संजय मिश्रा की रिपोर्ट...**

वर्तमान सरकार छोटे व मध्यम क्रशर कारोबारियों के हितों को नजरअंदाज कर इसे ध्वस्त करने में जुटी है, साहेबगंज और पाकुड़ के गांवों में हजारों लोग भूखमरी की कगार पर हैं, क्रशर बंद होने के बाद ये लोग बच्चों व परिवार के पालन पोषण के लिए रोजगार की तलाश में पलायन करने को मजबूर हैं। रोज नई दिल्ली, कोलकाता, गुजरात एवं मुंबई जैसे महानगरों में रोजगार की तलाश में लोग ट्रेनों पर जाते देखे जा रहे हैं। पिछले दो महीनों में सरकार के निर्देशानुसार जिला प्रशासन की ओर से आवशयक पूरी कागजात नहीं होने की आड़ में छोटे एवं मध्यम क्रशर को जेसीबी लगाकर ध्वस्त किया जा रहा है, हजारों की संख्या में इन छोटे व मध्यम क्रशरों में काम करने वाले मजदूर बेरोजगार हो रहे हैं। रोज की कमाई पर गुजर बसर करने वाले इन मजदूरों के सामने अचानक विकट समस्या आन पड़ी है, जाएं तो किधर जाएं। दूसरी ओर ये क्रशर मालिक खेत खलिहान बेचकर कई पीढ़ियों से मैनुअल क्रशर उद्योग चला रहे हैं और खनन विभाग की ओर से अबतक मांगी जाने वाली हर प्रकार की आवशयकताओं को चाहे कागजात की हो या अन्य प्रकार की, उसे पूरी करते आए हैं। फिर अचानक खनन विभाग ने रातों रात दमनकारी नीति के तहत छोटे मध्यम क्रशर के धंधे को जमींदोज करने का ठान लिया और जारी कर दिया तुगलकी फरमान। सैकड़ों क्रशर संचालकों के घरों में अचानक चूल्हा ठंडा पड़ने की चर्चा सुनाई देने लगी, झारखंड के ये भूमिपुत्र उद्यमी परिवार व बच्चों की पढ़ाई के साथ भविष्य की चिंता में जिला खनन पदाधिकारी कार्यालय के सामने चक्कर काट रहे हैं। कल तक इन्हीं क्रशर संचालकों की आहट से खनन विभाग के कार्यालय में रौनक आ जाती थी, आज उनके भटकने पर भी कोई कुछ सुनने को तैयार नहीं है।

हालात काफी चिंतनीय एवं गंभीर है। भाजपा के तेज़ तर्रार राजमहल विधायक अनंत ओझा जो इन क्रशर संचालकों की आवाज बनकर आज राजनीति के परवान पर हैं, उन्हें भी गंभीर चिंता सताए जा रही है, वे भी इसके सरल समाधान की चिंता में डूब मंथन कर रहे हैं। उनका कहना है कि सरकार को छोटे व मध्यम प्रकार के क्रशर के बारे में विशेष पहल करनी चाहिए और नियम को सरल बनाते हुए विभाग को कागजी प्रक्रिया पूरी करने के लिए तेजी लाने का निर्देश अविलंब देना चाहिए। साथ ही, विधायक अनंत ओझा ने कहा कि खनन एवं प्रदूषण विभाग के पदाधिकारी को संवेदनशील होकर काम करने की जरूरत है, जिससे ये क्रशर व्यवसायी आसानी से जल्द कागजी प्रक्रिया पूरी कर रोजगार चालू कर सकें। विधायक ने कहा कि सभी क्रशर संचालक हमारे शुभचिंतक भाई हैं, इनके परेशानी की चिंता हमें भी है, हम हर संभव मदद करने को तैयार हैं तथा उनके हितों की रक्षा करना हमारा दायित्व भी है।

वहीं पाकुड़ विधायक आलमगीर आलम ने कहा है कि वर्तमान सरकार की कथनी व करनी में अंतर है, जहां एक ओर रघुवर सरकार कह रही है कि रोजगार के लिए अवसर प्रदान किये जा रहे हैं, पलायन रोकने की दिशा में सरकार तेजी से काम कर रही है परन्तु धरातल पर विपरीत ही काम हो रहा है। विधायक

आलमगीर आलम कहते हैं कि क्रशर उद्योग संथाल क्षेत्र की धड़कन है, हजारों मजदूरों की रोजी रोटी इसपर निर्भर है, स्थिति चिंतनीय एवं दुर्भाग्यपूर्ण है, सरकार को आगे बढ़कर मजदूरों को भूखमरी की समस्या के निदान एवं पलायन रोकने के लिए विशेष पहल करने की आवशयकता है। उन्होंने कहा कि कार्रवाई के नाम पर विभाग जोर जबरदस्ती कर रहा है, इसमें क्रशर को ध्वस्त नहीं कर सील करना चाहिए तथा एनओसी की कागजी प्रक्रिया को सरल बनाते हुए इन क्रशर व्यवसाय को बचाना होगा ताकि क्षेत्र में बेरोजगारी की भयावह समस्या को रोका जा सके, अन्यथा इसके गंभीर परिणाम भी हो सकते हैं।

साहिबगंज चेंबर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष आफताब आलम ने कहा है कि वर्तमान सरकार पूंजीपतियों की सरकार है, बड़े पूंजीपति दूसरे प्रदेशों से आकर मोटे रकम खर्च कर ऑटोमेटिक क्रशर प्लांट लगा रहर हैं, जहां सिर्फ 5 मजदूर से काम चल जाता है, विभाग में उनकी पहुंच उंचे स्तर की है, उनका कागजी काम जल्द पूरा होता है, उस मुकाबले हर तरह से छोटे व मध्यम क्रशर संचालक काफी कमजोर पड़ रहे हैं। इससे साफ पता चलता है कि सरकार झारखंडवासियों को दरकिनार कर दूसरे राज्यों के पूंजीपतियों व व्यवसायियों के पक्ष में सीधा काम कर रही है। आफताब आलम कहते हैं कि शहर में भी सड़क, ड्रेनेज सिस्टम सहित कई अन्य भवन निर्माण कार्य करने के लिए दूसरे प्रदेशों से संवेदक या एजेन्सी को निविदा आर्वंटित किए जा रहे हैं, जानबूझकर निविदा की प्रक्रिया को जटिल एवं भारी भरकम बनाया गया है ताकि स्थानीय संवेदक निविदा प्राप्त नहीं कर सके। इससे साफ पता चलता है कि सरकार की सभी

कांग्रेस नेता बजरंगी यादव भी क्रशर मालिकों के पक्ष में हमेशा खड़े रहे हैं। उनका आरोप है कि राज्य सरकार इस स्थानीय उद्योग के लिए जानबूझ कर सिंगल विंडो की व्यवस्था नहीं कर रही है। अगर साहेबगंज, पाकुड़ में सिंगल विंडो की सुविधा हो तो यहां के क्रशर व्यवसायी यूं भटकने को मजबूर नही होते। सभी एनओसी यहीं उपलब्ध होते तो किसी को दिक्कत नहीं होती। कांग्रेस नेता कहते हैं कि प्रशासन क्रशर मालिकों के साथ अमानवीय व्यवहार कर रहा है, ऐसा लग रहा है जैसे संथाल के क्रशर मालिक विदेशो से आये हैं।

स्वामी अग्निवेश की पिटाई से कहीं संथाल में घायल ना हो जाये भाजपा

राजकुमार कुशवाहा

एक तरफ मुख्यमंत्री रघुवर दास संथालपरगना में भाजपा को मजबूत करने में जुटे हुए हैं, इसके लिए राज्य सरकार कई योजनाओं के सहारे पहाड़िया समेत अन्य आदिम जन जातियों का दिल जीतने में लगी हुई है. मुख्यमंत्री डाकिया योजना इसी की एक कड़ी है लेकिन खुद भाजपा कार्यकर्ता ही मुख्यमंत्री के सियासी सपने में पलीता लगा रहे हैं, पाकुड़ में स्वामी अग्निवेश के साथ जिस तरह भाजपा युवा मोर्चा के कुछ लोगों ने मारपीट की, उससे राष्ट्रीय स्तर पर झारखण्ड तो बदनाम हुआ ही पहाड़िया समाज भी भाजपा से नाराज हो गया. स्वामी अग्निवेश पहाड़िया समुदाय के ही कार्यक्रम में शामिल होने पाकुड़ आये थे, जहां 17 जुलाई 2018 को पाकुड़ के होटल मुस्कान पैलेस के बाहर स्वामी अग्निवेश के साथ हुई घटना से अमूमन शांत रहनेवाला यह आदिम जनजाति समाज उबल रहा है. इन्हें लगता है कि इनके अतिथि के साथ दुर्व्यवहार किया गया.

स्वामी के साथ मार पीट की घटना ने जहां विपक्ष को यह कहने का अवसर दिया कि भाजपा कार्यकर्ता कानून को अपनी जेब में लेकर घुमते हैं वहीं सूबे के मुख्य मंत्री रघुवर दास के संताल परगना में अपनी पैठ मजबूत करने की रणनीति को भी कमजोर कर दिया है. संताल परगना में विपक्ष की दमदार घेराबंदी को कमजोर करने के लिए पिछले चार साल से मुख्यमंत्री संताल परगना में लगातार कार्य कर रहे हैं. खास कर लिट्टीपाड़ा उपचुनाव में भाजपा को मिली हार के बाद मुख्यमंत्री के द्वारा जबरदस्त घेराबंदी शुरू की गयी.

अब जरा इसके सियासी असर को समझा जाये. पाकुड़ जिले में तीन विधानसभा सीट और पाकुड़-साहिबगंज मिला कर राजमहल लोक सभा सीट फिलहाल झामुमो की झोली में है. राजनीति के पिक्र में आपको अगर थोड़ा सा पीछे ले जायें तो जगजाहिर सी बात है कि झामुमो के इस गढ़ में न केवल भाजपा बल्कि सूबे के मुख्यमंत्री रघुवरदास ने सेंधमारी का प्रयास तो जरूर किया. लेकिन उन्हें और भाजपा को पटखनी खानी पड़ी. इसके बाद लिट्टीपाड़ा उपचुनाव की हार को लेकर उच्चस्तरीय समीक्षात्मक विचार किया गया कि आखिर लिट्टीपाड़ा उपचुनाव क्यों हारे और क्या इसका असर वर्ष 2019 के लोकसभा और आनेवाले विधानसभा चुनाव में पड़ सकता है और इस समीक्षा में राजनीतिक माईलेज कम मिलने को लेकर सूबे के मुख्यमंत्री ने भाजपा की पैठ बनाने के लिए जोरदार कवायद शुरू किये और उन्होंने खासकर लिट्टीपाड़ा विधानसभा क्षेत्र में मुख्यमंत्री डाकिया खाद्यान्न योजना, 217 करोड़ की लागत से ग्रामीण जलापूर्ति योजना का शुभारंभ कराया. इसके पहले से चल रहे वनबंधू योजना में गति लाने का हर संभव प्रयास किया. सूबे के मुख्यमंत्री ने आदिवासी और आदिम जनजाति पहाड़िया समुदाय के लोगों से सीधा जुड़ने के लिए योजनाएं चलायी और जनसंवाद किया. इतना ही नहीं, हर ग्रामीण के अंदर विकास का विश्वास जगाने के लिए लिट्टीपाड़ा के मुकरी पहाड़ को आदर्श गांव के रूप में विकसित किया. मुकरी पहाड़ के आदिम जनजाति समुदाय के हर एक घर का कायाकल्प कर दिया और बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य, रोजगार से सीधा ग्रामीणों को जोड़ दिया गया. लिट्टीपाड़ा के आदिवासी और आदिम जनजाति पहाड़िया की विकास की राजनीति को सूबे के मुख्यमंत्री संताल परगना में वोट बैंक के रूप में कैश करना चाहते हैं. संतालपरगना की राजनीति पर अगर गौर करें तो अधिकांश सीटों पर भाजपा के विधायक जरूर हैं, लेकिन पाकुड़ जिले के तीनों विधानसभा में भाजपा की उपस्थिति नगण्य है. सवाल यह उठता है क्या विधानसभा में सूबे के मुख्यमंत्री और भाजपा एक बार फिर अपना परचम लहरा पाएंगे !

विधानसभा चुनाव से अब तक के सियासी परिदृश्य को देखें तो कई सकारात्मक और नकारात्मक पहलू उभर कर सामने आये हैं. इस संबंध में कई चौंकाने वाले आंकड़े सामने आ रहे हैं. कई लोगों का मानना है कि भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सरकार ने ऑनलाईन काम तो शुरू कर दिया लेकिन इन्फ्रास्ट्रक्चर के अभाव में योजना सरजमी पर उतरने से पहले ही दम तोड़ रही है . ऑनलाईन खाद्यान वितरण योजना, प्रमाण पत्र बनाने, लाईसेंस बनाने, व्यवसायियों का टैक्स जमा करने और ऑनलाईन पेपर बनाने की कवायद कई खट्टे-मीठे अनुभव भाजपा को दे सकती है.

ग्राउंड जीरो पर देखें तो सरकार की इस योजना से आम लोग खुश तो जरूर थे लेकिन जब उन्हें इन्फ्रास्टक्चर के अभाव में कार्यालय की दौड़ लगानी पड़ी तो सभी के भौंह चढ़ गये. आम लोक इतना जरूर कहते हैं कि सरकार को योजना लाने से पहले अपने इन्फ्रास्ट्रक्चर नेटवर्क को मजबूत करना जरूरी था. नोटबंदी ने भी संताल परगना के लोगों को एक नया अनुभव दिया है.

लोग नोटबंदी से तो जरूर खुश थे लेकिन छोटे व्यवसायी जीएसटी और कैशलेस व्यवस्था लागू करने के बाद थोड़े परेशान तो जरूर हुए हैं लेकिन इसे सरकार की अच्छी पहल भी बता रहे हैं. सरकार की मंशा कैशलेश की तरफ सबसे ज्यादा दौड़ रही है. लेकिन कैशलेश को धरती पर उतारना सरकार के लिए बड़ी चुनौती होगी. खट्टे-मीठे अनुभव के बीच कई व्यवसायी इस बात को भी स्वीकार करने लगे हैं कि सरकार ने भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए ऑनलाईन व्यवस्था तो जरूर किया है लेकिन ऑनलाईन व्यवस्था बाबूगीरी की भेंट चढ़ जा रही है.

लिट्टीपाड़ा की हार से भी सबक नहीं

लिट्टीपाड़ा विधानसभा उपचुनाव हार जाने के बाद मुख्यमंत्री रघुवर दास ने संताल परगना की घेराबंदी तेज कर दी. संताल परगना के कई सीटो पर जड़ जमाये बैठे झामुमो के किले को धवस्त करने के लिए और पहाड़ो पर बसे पहाड़िया वोटरों को कैश करने के लिए राज्य भर में जनजातीय समूह डाकिया योजना की शुरूआत 20 अप्रैल 2017 को लिट्टीपाड़ा के सूरज बेडागांव से किया गया . मुख्यमंत्री श्री दास ने स्वयं लिट्टीपाड़ा के सूदूर पहाडी पर पहुँचकर पहाडिया परिवारों के बीच 35-35 किलो अनाज पहुँचाया. केवल राजमहल लोकसभा क्षेत्र की अगर बात करें तो लगभग 45 हजार पहाडिया वोटर हैं. मुख्यमंत्री की इस योजना ने पहाडिया समुदाय को सरकार के साथ जोड़ने का काम किया था . इसी योजना को लेकर भाजपा कार्यकर्ता भी सूदूर पहाडों पर बसे पहाड़िया समुदाय के बीच जाकर इनको भाजपा के साथ जोडने में लग गये. इस योजना ने पहाड़िया समुदाय को प्रभावित भी किया और पहाड़िया वोटरो का झुकाव भी भाजपा के प्रति होने लगा था. लेकिन स्वामी अग्निवेश की पिटाई ने सब गुड गोबर कर दिया.

स्वामी की कुटाई बीजेपी वोट की पिटाई

स्वामी अग्निवेश अखिल भारतीय आदिम जनजाति विकास समिति झारखंड के बैनर तले 17 जुलाई 2018 को पाकुड जिला के लिट्टीपाड़ा के मांझी विजय मरांडी स्टेडियम में आयेजित हिल एसेम्बली पहाड़िया महासभा को संबोधित करने पाकुड़ के होटल मुस्कान पैलेस पहुँचे थे. जैसे ही स्वामी अग्निवेश कार्यक्रम स्थल पर पहुँचने के लिए होटल से बाहर आये. भाजयुमो के कार्यकताओं ने इसका विरोध करते हुए उस पर हमला कर दिया. इस घटना में स्वामी अग्निवेश घायल भी हुए. हालांकि इस मामले में दोनो ओर से अलग-अलग मामला दर्ज कराया गया है. इधर अखिल भारतीय आदिम जनजाति विकास समिति के बैनर तले आयोजित हिल एसेम्बली पहाड़िया महासभा के मुख्य अतिथि स्वामी अग्निवेश के सभा में नहीं पहुंच पाने के कारण पहाड़िया समुदाय के नेता व समाज के लोग आहत हुए हैं. समझा जाता है कि इस घटना के बाद संताल परगना का पहाड़िया समुदाय भाजपा से नाराज हो कर गोलबंद होना शुरू हो गया है और यदि ऐसा होता है तो निश्चित तौर पर झामुमो के गढ़वा इलाके में पहाड़िया वोटरों के माध्यम से मुख्यमंत्री की सेंधमारी किये जाने की योजना पर जरूर असर पड़ेगा. .

यह व्यवसायियों की नाराजगी का एक बड़ा कारण बनता जा रहा है. आम लोग की बात करें तो देश की आजादी के बाद इतिहास में पहली बार कर्मचारी लाभुक के घर जाकर आवास बनाने की विनती कर रहे हैं, जो सरकार की एक बड़ी उपलब्धि जरूर मानी जा सकती है.

सौभाग्य योजना के तहत सरकार ने हर घर को रौशन करने की बात तो जरूर कही है लेकिन इस रौशनी को विपक्ष मद्धिम बताने में जुटा है. संताल परगना में विपक्ष ने भूमि अधिग्रहण बिल, स्थानीय नीति, एसपीटी एक्ट को लेकर संताल परगना में घेरने की जोरदार घेराबंदी की है और इसकी कवायद भी शुरू कर दी है. विरोधी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने सीधे तौर पर लोगों को यह समझाना शुरू कर दिया है कि भाजपा कॉरपोरेट घराने की पार्टी है और जल, जंगल जमीन हड़प कर कॉरपोरेट घराने को दे देगी. इन बातों को ग्रामीण इसलिए सुनकर यकीन के बॉर्डर लाईन तक पहुंच जाते हैं, चूंकि एक खास चुनाव चिन्ह उनके विश्वास और आस्था में कई वर्षों से पहचान बनायी हुई है.

राजनीति के इस खेल में किसकी जीत और किसकी हार होगी यह तो आने वाला समय ही बतायेगा, लेकिन यह बताना भी आवश्यक हो गया है कि इस बार के चुनाव की नैया सिर्फ पार्टी ही पार नहीं करा सकती है, बल्कि कार्यकर्ता अहम होंगे . आरोप-प्रत्यारोप के इस दौर में आम लोग भी बीच भंवर में जरूर अटके हुए हैं.

जरमुंडी में खिलेगा कमल या फिर बरसेगा बादल

जरमुंडी में अब हालात बदले हैं भाजपा के प्रति गरीब, मजदूर व मध्यमवर्ग के वोटरों में आकर्षण बढ़ा है जिसे अब आधुनिक सुविधाओं से लैस, मिलनसार, मृदुभाषी व आर्थिक रूप से सक्षम उम्मीदवार लाभ ले सकते हैं। परन्तु भाजपा के लिए सबसे बड़ी मुसीबत संभावित उम्मीदवारों की बनती जा रही लंबी सूची है। इनमें रीता चौरसिया,अभयकांत प्रसाद और सीताराम पाठक के नाम की चर्चा है।

भाजपा के नेताओं के लिए आवश्यक सूचना दुमका जिले के जरमुंडी विधानसभा क्षेत्र में जरा संभलकर चलें। इस क्षेत्र में संभावित भाजपा उम्मीदवारों का मेला लग रहा है। लगभग आधे दर्जन भाजपा के संभावित उम्मीदवारों की सूची भी अब लंबी बनती जा रही है। पिछली बार भी भाजपा के संभावित उम्मीदवारों की सूची लंबी थी, जिसमें इस बार और नाम जुड़ गए हैं। पिछली बार भाजपा संगठन ने अपने पुराने नेता व पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अभय कांत प्रसाद को टिकट देकर जीत की भरपूर कोशिश की थी, परन्तु अभय कांत प्रसाद को जरमुंडी की जनता ने स्वीकार नहीं किया। वैसे जरमुंडी से जीतने वाले कांग्रेस उम्मीदवार काफी कम वोटों से ही जीते हैं लेकिन दूसरे स्थान पर पूर्व मंत्रीं हरि नारायण राय रहे थे, जो अपने जीत को लेकर कुछ ज्यादा ही आश्वस्त थे। फिलहाल वे आय से अधिक संपत्ति के मामले में बुरी तरह जकड़े हुए हैं, इस बार के चुनाव तक उन्हें ज्यादा राहत नहीं मिलने वाली। जरमुंडी विधानसभा क्षेत्र का ज्यादातर इलाका ग्रामीण क्षेत्र है, यहां की जनता की आय का स्रोत मुख्यतः खेती व कृषि आधारित अन्य रोजगार है। क्षेत्र में गरीबी आज भी दिखती है, शिक्षा का स्तर काफी कम है। सरकारी सुविधाएं आमजनता तक बमुश्किल पहुंच रही है। हां जो कुछ सजग लोग हैं उन्हें सरकारी सुविधाएं मिल रही है। पूर्व मंत्री हरि नारायण राय के समय में कुछ ग्रामीण सड़कें बनी थीं जिससे आवागमन में कुछ सुविधा हुई है। ग्रामीण इलाकों के मजदूर वर्ग के लोगों की मानें तो हाल के दिनों में भाजपा सरकार की ओर से चल रही विभिन्न योजनाओं में जैसे प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्जवला योजना, उजाला योजना को जनता ने सराहा है और भाजपा की ओर उनका आकर्षण बढ़ा है। लेकिन पहले के नेता इलाके में पार्टी की कोई खास जगह नहीं बना पाए थे।

लेकिन अब हालात बदले हैं भाजपा के प्रति गरीब, मजदूर व मध्यमवर्ग के वोटरों में आकर्षण बढ़ा है जिसे अब आधुनिक सुविधाओं से लैस, मिलनसार, मृदुभाषी व आर्थिक रूप से सक्षम उम्मीदवार लाभ ले सकते हैं। परन्तु भाजपा के लिए सबसे बड़ी मुसीबत संभावित उम्मीदवारों की बनती जा रही लंबी सूची है। वर्तमान समय में नजर डालें तो भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रीता चौरसिया असरदार तरीके से जरमुंडी विधानसभा क्षेत्र में लगातार जनसंपर्क अभियान चला रही हैं।

जनसंपर्क अभियान पर गौर करें तो उनके संपर्क में मतदाताओं का रूझान बढ़ता दिख रहा है, लोग उनकी बातों को सुन रहे हैं। रीता चौरसिया पिछले कुछ वर्षों से जरमुंडी क्षेत्र की जनता के बीच अपनी दमदार उपस्थिति बनाए हुए है।

पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अभय कांत प्रसाद भी मैदान में डटे हैं, उनका मानना है कि हालात बदले हैं लोग स्थानीय होने के नाते इस बार समर्थन देंगे लेकिन उनकी बढ़ी उम्र, कम जनसंपर्क अभियान मतदाताओं से दूरी का कारण दिख रहा है। उसके बाद संथाल के सदस्यता प्रभारी और गोड्डा सांसद के करीबी भाजपा नेता सीताराम पाठक भी मैदान में जोरदार तरीके से जनसंपर्क अभियान में दिख रहे हैं, सीताराम पाठक स्थानीय कार्यकर्ताओं में काफी लोकप्रिय हैं। स्थानीय नेता बताते हैं कि अगर पिछली बार दुराग्रह से प्रदेश अध्यक्ष ने सीताराम

संथाल के सदस्यता प्रभारी और गोड्डा सांसद के करीबी भाजपा नेता सीताराम पाठक भी मैदान में जोरदार तरीके से जनसंपर्क अभियान में दिख रहे हैं, सीताराम पाठक स्थानीय कार्यकर्ताओं में काफी लोकप्रिय हैं। स्थानीय नेता बताते हैं कि अगर पिछली बार दुराग्रह से प्रदेश अध्यक्ष ने सीताराम पाठक का नाम नहीं काटा होता तो आज वे विधायक होते।

पाठक का नाम नहीं काटा होता तो आज यहां से भाजपा का विधायक होताण सीताराम पाठक क्षेत्र में लगातार सक्रिय हैं। इनकी संगठन क्षमता भी अच्छी है। इन सबके अलावा देवघर नगर निगम के पूर्व उपमहापौर संजयानंद झा भी मैदान में लगातार जनसंपर्क अभियान चला रहे हैं। पिछली बार वे झाविमो के उम्मीदवार घोषित हुए थे, लेकिन पार्टी के महासचिव प्रदीप यादव के हस्तक्षेप के बाद इनका टिकट वापस ले लिया गया था। जिससे क्षुब्ध होकर संजयानंद झा ने झाविमो से अपने को किनारा कर लिया था और हाल ही में इन्होंने प्रदेश कार्यालय में भाजपा का दामन थामा है। संजयानंद झा भी क्षेत्र में सघन जनसंपर्क अभियान चला रहे हैं, पिछली बार झाविमो की ओर से कई बड़ी जनसभाओं में दमदार उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं। दिलीप कुंवर भी इस बार भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ने के लिए कमर कस चुके हैं। इसके अलावा दशरथ साह सहित कई अन्य नेता भी अपने को भाजपा के संभावित उम्मीदवार बता रहे हैं। यहां भाजपा की जीत के लिए जरूरी है कि युवा और बेहतर संगठन छवि वाले उम्मीदवार को ही पार्टी टिकट दे,अन्यथा इस बार भी भाजपा को मुंह की खानी पड़ेगी।

वर्तमान समय में कांग्रेस के विधायक बादल पत्रलेख अपनी सादगी, क्षेत्र में उपलब्धता मिलनसार व सभी के लिए हमेशा सुलभ रहने की वजह से आज भी किसी भी पार्टी के उम्मीदवारों से लोकप्रियता के मामले में में आगे चलते दिख रहे हैं।

सभी बीजेपी सांसद स्कूलों के विलय के खिलाफ

लक्ष्मण भी नाराज

झारखंड में स्कूलों के विलय को लेकर विपक्ष के निशाने पर रही रघुवर सरकार इस मुद्दे पर बुरी तरह फंसती नजर आ रही है। सरकार के इस फैसले के खिलाफ अब बीजेपी के ही सांसदों ने आवाज उठाई है। बता दें कि सूबे के सभी बीजेपी सांसदों ने कल सीएम रघुवर दास को पत्र लिखकर प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों के विलय की प्रक्रिया को रोकने का आग्रह किया है। उन्होंने अपने पत्र में लिखा है कि झारखंड में पिछले कुछ माह से छात्रों की संख्या के आधार पर प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय को निकटतम स्कूलों में विलय कर स्कूलों की संख्या कम करने की प्रक्रिया की जा रही है। सरकार की इस प्रक्रिया से ग्रामीण क्षेत्रों में आम जनता में काफी असंतोष है।

सांसदों ने पत्र में आगे लिखा है कि निरक्षरता के कलंक को समाप्त करने के लिए अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान के तहत हर गांवों और कस्बों में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूल खोलकर हर बच्चे को साक्षर बनाने का अभियान चलाया था। इस क्रम में बड़े पैमाने पर स्कूल खोलने का कार्य किया गया था। लेकिन दुर्भाग्य से ऐसे स्कूल छात्रों के संख्या के आधार पर बंद किए जा रहे हैं यह जनता के लिए कल्पना से परे है। इन स्कूलों को बंद करने के निर्णय से जनता में रोष है।

उन्होंने कहा है कि ऐसे स्कूलों के लिए बड़े-बड़े भवन बने हुए हैं जो बंद होने के बाद भविष्य में खंडहर में बदल जाएंगे या फिर अराजक तत्वों के अनैतिक गतिविधियों के केंद्र हो जाएंगे। कहा कि गांव में जनसंख्या की वृद्धि हुई है लेकिन शिक्षकों की कमी के कारण एवं अव्यवस्था के कारण बच्चे निजी स्कूलों की ओर भाग रहे हैं। इसलिए स्कूलों की व्यवस्था ठीक करना जरूरी है। उन्होंने आगे कहा है कि झारखंड पहाड़ी क्षेत्र, नदी-नालों से भरा है यहां के गांव छोटे-छोटे हैं। ऐसे में दूरदराज के इलाकों में छोटे-छोटे बच्चों को एक गांव से दूसरे गांव में जाना मुश्किल है। इसलिए इन गांवों में स्कूलों को बंद करने से अशिक्षा बढ़ेगी। इस परिस्थिति में सर्व शिक्षा अभियान के तहत खुले स्कूलों को बंद करने का निर्णय से कई गांव में स्कूल विहीन हो जाएंगे और झारखंड के हजारों गांवों के बच्चे प्रारंभिक शिक्षा से वंचित हो जाएंगे।

यह स्थिति राज्य के हित में नहीं है और इसका खामियाजा खामियाजा जनप्रतिनिधियों को भुगतना पड़ रहा है आगे उन्होंने कहा है कि इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए इस प्रक्रिया को तुरंत खत्म किया जाए और विलय के निर्णय को आने वाले एक वर्ष के लिए कम से कम रोककर शिक्षकों और शिक्षा पदाधिकारियों को स्कूलों की स्थिति सुधारने का अवसर दिया जाए। इसके साथ ही सभी सरकारी कर्मियों को सख्त आदेश भी दिए जाएं कि वे शिक्षा की बेहतरी का प्रयास करें। बता दें कि इस पत्र में राज्य के सभी बीजेपी सांसदों रविन्द्र कुमार राय, कड़िया मुंडा, रविन्द्र कुमार पाण्डेय, निशिकांत दुबे सुनील कुमार सिंह, विद्युतवरन महतो, पशुपतिनाथ सिंह, विष्णु दयाल राम, राम टहल चौधरी, सुदर्शन भगत, लक्ष्मण गिलुवा और जयंत सिन्हा ने हस्ताक्षर किए हैं।

झामुमो ने सरकार पर साधा निशाना

झामुमो के केन्द्रीय महासचिव सह प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा है कि स्कूलों के विलय को लेकर जो सवाल पार्टी पिछले दिनों उठाती आयी है। उसे बीजेपी के 10 सांसदों और दो केंद्रीय मंत्रियों ने सरकार के समक्ष रखा है। सांसदों ने पत्र लिखकर मुख्यमंत्री रघुवर दास से अपनी चिंता जाहिर की है। कहा है कि इस मामले को लेकर लोगों के अंदर आक्रोश है, लोग खफा हैं। राज्य में शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ करने का दावा करती है लेकिन दूरदराज के इलाकों में स्कूलों के विलय से विकास की गति थम जाएगी। झारखंड के आदिवासी इलाकों में बच्चे स्कूली शिक्षा से वंचित रह जाएंगे। उन्होंने कहा कि पार्टी शुरू से ही यह कहती रही है कि 1500 स्कूलों का विलय करने का सरकार का फैसला गलत है। इससे दूरदराज के इलाकों का विकास बाधित होगा। स्कूलों का विलय कर सरकार शराब का ठेका खोल रही है। पारा शिक्षकों को सरकार 8 से 10 हजार रुपए दे रही है जबकि शराब बेचने वालों को 28 से 30 हजार रुपए दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार स्कूलों को बंद करो और शराब के ठेके खोलो की नीति पर काम कर रही है। हालांकि पत्र में सांसदों द्वारा एक साल का समय दिए जाने की बात पर झामुमो ने सवाल खड़ा किया।

स्वतंत्रता दिवस

के अवसर पर साहिबगंज जिले के सभी व्यवसायी भाईयों के साथ प्रदेशवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं.

निवेदक

प्रकाश केडिया, समाजसेवी, बड़हरवा (साहिबगंज)

नीतीश कुमार से चिढ़ते क्यों हैं उपेंद्र कुशवाहा

केंद्रीय मंत्री और रालोसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा खुद को बिहार के सीएम का चेहरा बनाने की कवायद में जुटे हैं इसीलिए उन्होंने कई बार कहा है कि नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री के पद पर रहते हुए 15 साल हो गए हैं, और अब उन्हें खुद अपने पद से हट जाना चाहिए। बिहार की जनता ने उन्हें लगभग 15 साल का मौका दिया है। बिहार में किसी और को मौका देना चाहिए और उन्हें बड़ी राजनीति करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आखिर नेता मौका क्यों मांगता है। मौका इसलिए मांगता है ताकि वह अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर सके। लव-कुश समीकरण से आने वाले कुशवाहा की यह बेसब्री आखिर क्या मैसेज दे रही है।

कुणाल

बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की मीटिंग के बाद जिस प्रकार जदयू नेताओं की बयानबाजी सीट बंटवारे को लेकर थमी है उससे ये तो कयास लगाए ही जा रहे हैं कि इस मुद्दे पर जरूर कोई ऐसी बात हुई है जिसने जदयू के सब्र को बांध दिया है। वो अब मुखर होकर बीजेपी पर ताने नहीं मार रहा है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार खुद इस बात को कह चुके हैं कि सबकुछ मिल-बैठकर तय कर लिया जाएगा, यानी कहा जा सकता है कि पहले वाली तल्खी अब बिलकुल दिखाई नहीं दे रही है। विशेष राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग को वो जरूर उठा रहे हैं लेकिन इस पर उन्होंने कुल मिलाकर बीजेपी और केंद्र सरकार को कोस नहीं रहे बल्कि एक सहयोगी की तरह ही सिर्फ अपनी मांग को जायज ठहरा कर अपनी बात भर रख रहे हैं। इन सभी बातों से इतर राज्य के दो अन्य सहयोगी दलों में सीट बंटवारे को लेकर जो मांग उठी थी वह अभी भी ठंडा नहीं हुई है। लोजपा और आरएसएसपी अभी भी अपने-अपने तरीके से लोकसभा चुनावों के मद्देनजर सीटों के बंटवारे को लेकर अपनी बात अलग-अलग फोरम पर रख रहे हैं। देखा जाय तो अमित शाह की मुलाकात भी सिर्फ जदयू अध्यक्ष नीतीश कुमार से ही हुई है। इन दो पार्टियों को डर है कि कहीं जदयू के फेर में उनके कद को और छोटा न कर दिया जाए।

@Rajneeti_Guru | @gururajneeti
www. rajneetiguru.com
YouTube Rajneeti Guru Web News Bulletin

पिछली बार बिहार विधानसभा चुनाव में महागठबंधन के जरिए बीजेपी को धूल चटाकर नीतीश कुमार ने अपना कद काफी बड़ा कर लिया था. लेकिन उनका वो विशालकाय स्वरूप सिर्फ डेढ़ साल तक ही रहा. आज वही नीतीश कुमार एनडीए में हैं. सीएम की कुर्सी पर विराजमान हैं. लेकिन सीएम होते हुए भी उन्हें अपने ही सहयोगी पार्टी से ही चुनौती मिल रही है.

अब तक नीतीश कुमार अपनी राजनीतिक साख बचाने का सौदा बीजेपी से कर रहे थे. 2019 के लोकसभा चुनाव के लिए सीटों के बंटवारे को लेकर मजबूत दावेदारी के लिए कई सारे जतन किए जा रहे थे. अमित शाह की मुलाकात के बाद लगा कि शायद उन्होंने मामला सेट कर लिया है. लेकिन सीटों का पेंच अब तक नहीं सुलझा है.

सीटों के बंटवारे को लेकर पहले से ही प्रेशर पॉलिटिक्स इतनी तेज है कि जदयू को आरएलएसपी जैसी नई पार्टी ने भारी भरकम चुनौती दे डाली है. एनडीए में शामिल उपेन्द्र कुशवाहा की पार्टी आरएलएसपी ने जेडीयू से अधिक सीटों की डिमांड रख दी है. इतना ही नहीं आरएलएसपी की तरफ से कहा गया है कि बिहार में एनडीए के चेहरे के तौर पर नीतीश कुमार के बजाए उपेन्द्र कुशवाहा को सामने लाया जाए.

रालोसपा की तरफ से कहा गया है कि पिछले चार वर्षों में आरएलएसपी का सपोर्ट बेस बढ़ा है, इसलिए 2019 के चुनाव में उन्हें जदयू से ज्यादा सीटें मिलनी चाहिए. आरएलएसपी के उपाध्यक्ष और पार्टी के प्रवक्ता जीतेन्द्र नाथ इस संबंध में कहते हैं कि एनडीए के भीतर जहां बीजेपी और जदयू के बीच सीट बंटवारे पर बहुत बातें हो रही हैं, वहीं एनडीए के सहयोगी दलों आरएलएसपी और एलजेपी की चर्चा भी नहीं हो रही है. हम जदयू से ज्यादा सीटों पर लड़ना चाहते हैं क्योंकि पिछले चार वर्षों में बिहार में हमारा सपोर्ट बेस बढ़ा है. हमारे नेता उपेन्द्र कुशवाहा बिहार का भविष्य हैं. उनकी स्वीकार्यता हाल के दिनों में बढ़ी है. ये सही वक्त है कि उपेन्द्र कुशवाहा को एनडीए का चेहरा बनाया जाए.

बिहार विधानसभा चुनाव में महागठबंधन के जरिए बीजेपी को धूल चटाकर नीतीश कुमार ने अपना कद काफी बड़ा कर लिया था। लेकिन उनका वो विशालकाय स्वरूप सिर्फ डेढ़ साल तक ही रहा। आज वही नीतीश कुमार एनडीए में हैं। सीएम की कुर्सी पर विराजमान हैं। लेकिन सीएम होते हुए भी उन्हें अपने ही सहयोगी पार्टी से ही चुनौती मिल रही है।

वे आगे कहते हैं कि 2014 के लोकसभा चुनाव में हमने तीन सीटों पर चुनाव लड़ा था. तीनों ही सीटों पर जीत हासिल की. हालांकि पार्टी के एक सांसद अरुण कुमार ने साथ छोड़ दिया है लेकिन फिर भी आरएलएसपी के दो सांसद है. जबकि जदयू के सिर्फ दो सांसद जीतकर आए. उनका कहना है कि बिहार में नीतीश कुमार भले ही नॉन यादव ओबीसी नेता के तौर पर बड़े चेहरे हैं.

लेकिन उपेन्द्र कुशवाहा ने हाल के दिनों में अपने समर्थकों की संख्या में इजाफा किया है. वो कोयरी जाति से आते हैं. कोयरी कुर्मी और ईबीसी की धानुक जैसी जातियों का कुल 20 फीसदी वोट शेयर है. इसको ध्यान में रखते हुए अब नीतीश के बजाए उपेन्द्र कुशवाहा को एनडीए का चेहरा बनाया जाना चाहिए.

2019 के लोकसभा चुनाव में सीटों के बंटवारे को लेकर एनडीए में खींचतान की काफी दिनों से चर्चा है. आरएलएसपी ने अपनी नई डिमांड रखकर एनडीए के भीतर की खलबली को और तेज कर दिया है.

आरएलएसपी की तरफ से कहा जा रहा है कि नीतीश कुमार को एनडीए का चेहरा बनाए जाने का फैसला एकतरफा है। इस बारे में एनडीए में फैसला नहीं हुआ है। पिछले 3-4 सालों से नीतीश कुमार का जनाधार कम हुआ है। पिछले 7-8 सालों में जेडीयू से 4 बड़े नेता निकले हैं। नागमणि, उपेन्द्र कुशवाहा, जीतनराम मांझी और शरद यादव जैसे बड़े नेता पार्टी से बाहर हुए हैं।

आरएलएसपी के बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सुबोध कुमार कहते हैं कि अमित शाह की नीतीश कुमार के साथ मुलाकात बहुत अच्छा कदम था. लेकिन वो पहला पड़ाव था. उसके आगे के पड़ाव में उपेन्द्र कुशवाहा और रामविलास पासवान के साथ फाइनल राउंड होना बाकी है. अभी सिर्फ दो लोगों के बीच में बातें हुई हैं. यानी अमित शाह और नीतीश की मुलाकात के बाद भी सीटों का पेंच खत्म नहीं हुआ है. उपेन्द्र कुशवाहा और रामविलास पासवान की रजामंदी होने तक मामला उलझा रहेगा. उपेन्द्र कुशवाहा की आरएलएसपी एनडीए में जदयू से भी बड़ी भूमिका तलाश रही है. बिहार में बीजेपी भी मान रही है कि 2019 के चुनाव में एनडीए का चेहरा नीतीश कुमार ही होंगे लेकिन आरएलएसपी नहीं मान रही.

जिस तरह से पिछले कुछ दिनों से जेडीयू सीटों के बंटवारे का मुद्दा उठने से पहले बीजेपी के ऊपर दबाव की राजनीति बनाए हुए थी. उसी तरह से आरएलएसपी भी इसी राजनीति के जरिए लगातार नीतीश कुमार को निशाने पर लिए हुए है. कुछ दिनों पहले आरएलएसपी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नागमणि ने भी इसी तरह का बयान दिया था. उन्होंने भी नीतीश कुमार को एनडीए का चेहरा मानने से इनकार करते हुए उपेन्द्र कुशवाहा को आगे किए जाने की बात कही थी. आरएलएसपी की तरफ से कहा जा रहा है कि नीतीश कुमार को एनडीए का चेहरा बनाए जाने का फैसला एकतरफा है. इस बारे में एनडीए में फैसला नहीं हुआ है. सियासी जानकार कहते हैं कि पिछले 3-4 सालों से नीतीश कुमार का जनाधार कम हुआ है. पिछले 7-8 सालों में जेडीयू से 4 बड़े नेता निकले हैं. नागमणि, उपेन्द्र कुशवाहा, जीतनराम मांझी और शरद यादव जैसे बड़े नेताओं ने पार्टी से बाहर हुए हैं. चारों ने मिलकर नई पार्टी खड़ी की है. दूसरी बात है कि नीतीश कुमार की कंफ्यूजन की पॉलिटिक्स से जनता का मोह उनसे भंग हुआ है. इसी कंफ्यूजन में उनकी तरफ से बयान आया है कि वो एनडीए का चेहरा होंगे.

आरएलएसपी अपने दावे को पुख्ता करने के लिए 2014 के लोकसभा नतीजों का हवाला देती है. 2014 में आरएलएसपी ने 3 सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए थे. तीनों ही सीटों पर उसे जीत हासिल हुई थी. जबकि जदयू ने सिर्फ 2 सीटों पर कामयाबी पाई थी. हालांकी इसी चुनाव में आरएलएसपी ने 3 सीटें जीतकर 3 फीसदी वोट हासिल किए थे. जबकि 2 सीटें जीतने वाली जेडीयू का वोट शेयर 15.80 फीसदी था.

वहीं 2015 के बिहार विधानसभा चुनाव में आरएलएसपी ने 23 सीटों पर चुनाव लड़ा था, इसमें सिर्फ 2 सीटों पर जीत हासिल की थी. पार्टी को 2.6 परसेंट वोट मिला. जबकि जेडीयू 101 सीटों पर चुनाव लड़कर 71 सीटों पर जीत हासिल की थी. जेडीयू को 16.8 फीसदी वोट हासिल हुए थे. आरएलएसपी ने विधानसभा चुनाव में जो 2 सीटें हासिल की थीं. उनमें से एक उपेन्द्र कुशवाहा के साथ है जबकि दूसरा आरएलएसपी से बाहर हुए अरुण कुमार के साथ. आरएलएसपी की नई डिमांड पर जदयू नेता केसी त्यागी कहते हैं कि 243 के हाउस में जिनका एक एमएलए हो, वो मधु कोड़ा की तरह मुख्यमंत्री बनने के ख्वाब देख रहे हैं. इस तरह के बयान हमारी प्रतिक्रिया के काबिल भी नहीं हैं.

दरअसल सीटों के बंटवारे को लेकर बिहार में जबरदस्त प्रेशर पॉलिटिक्स चल रही है. इसी कड़ी में नीतीश कुमार ने पहले योग दिवस के सरकारी कार्यक्रम में शामिल न होकर बीजेपी को संदेश दिया. नोटबंदी पर अपने पुराने बयान से पलटकर बैंकों की आलोचना के जरिए केंद्र सरकार की नीयत पर सवाल उठाकर संदेश दिया. अब उसी तरह का प्रेशर पॉलिटिक्स आरएलएसपी कर रही है. सूत्रों के हवाले से ये भी खबर आ रही है कि सीटों पर रजामंदी न बनने की सूरत में आरएलएसपी विपक्ष के महागठबंधन में शामिल हो सकती है.

ओबीसी जातियों में यादव 14 फीसदी वोट शेयर के साथ सबसे बड़ी जाति है. बनिया जाति का वोट शेयर 11 फीसदी का है. इसके बाद 8 परसेंट के साथ कोयरी-कुर्मी और ईबीसी धानुक जातियों का स्थान आता है. नीतीश और उपेन्द्र कुशवाहा इसी वोट शेयर के सपोर्ट बेस पर राजनीति करते हैं. लेकिन नीतीश की विकासवादी छवि और सुशासन वाला चेहरा उन्हें बड़ा विस्तार देती है. 3 सांसदों वाले आरएलएसपी के दो धड़े पहले ही हो चुके हैं. अरुण कुमार अपना अलग गुट बना चुके हैं. नीतीश से आगे निकलने का दावा उपेन्द्र कुशवाहा की सिर्फ प्रेशर पॉलिटिक्स है ताकि वो बीजेपी से सीटों के मामले में मोलभाव कर सकें.

कांवरिया पथ पर नहीं, देवघर आकर टूटने लगती है शिवभक्तों की आस

8-10 घंटा कतार में लगकर थके हारे कांवरिये खोने लगते हैं धैर्य

शिव के नगर में झमेलों की डगर

रणजीत झा

देवघर के विश्वप्रसिद्ध श्रावणी मेला का आगाज हो चुका है. झारखंड सीमा के अंदर मात्र 10 किलोमीटर के कांवरिया पथ में श्रद्धालुओं की सुविधाओं के मद्देनजर शुद्ध पेयजल, शौचालय, स्नानागार, विश्रामालय सहित कई अन्य सुविधाएं स्थाई व अस्थाई रूप से लगाई गई है. इस पुण्य कार्य में स्वयंसेवी संस्था, राजनीतिक दल, शिक्षण संस्थाएं, कारपोरेट कंपनियां पूरे दमखम के साथ शिविर लगाकर शिवभक्तों की सेवा कर रहे हैं. 110 किलोमीटर दूर सुलतानगंज से कांवरिए उत्तरवाहिणी गंगा से गंगाजल भरकर पैदल यात्रा कर आते हैं, जिनके लिए यह सुविधाएं अत्यंत ही आवश्यक हो जाती हैं . लेकिन सरकार का सिस्टम क्या कर रहा है !

मेले से ठीक पहले देवघर के एसपी एनके सिंह ने 77 लापरवाह पुलिसकर्मियों को दंडित कर यह संदेश देने की कोशिश की कि किसी कीमत पर कोताही बर्दाश्त नहीं होगी. होनी भी नहीं चाहिए . हर साल राज्य सरकार की ओर से श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए करोड़ों रूपए खर्च किये जाते हैं . श्रावणी मेला के सफल संचालन के लिए बाबा बैद्यनाथधाम बासुकीनाथधाम मेला प्राधिकार के अध्यक्ष मुख्यमंत्री रघुवर दास स्वयं सक्रिय हैं. इसके अलावा जिला प्रशासन के सैकड़ों पदाधिकारी व हजारों कर्मियों की पूरी टीम के साथ महीने भर मेला संचालन में जुटी है. हर वर्ष सुविधाएं बढाई जा रही हैं, परन्तु अब भी शिवभक्तों को जलार्पण के लिए कतार में 8 से 10 घंटे खड़े रहना पड़ रहा है, जो अत्यंत ही सोचनीय विषय है. 110 किलोमीटर पैदल चलने के बाद सिर्फ बाबानगरी में 8 से 10 घंटे कतार में खड़े रहना कांवरियों के लिए काफी कष्टकारक एवं असहनीय है. जलार्पण व्यवस्था में कई नए प्रयोग के तहत गर्भगृह में अरघा के अलावा वा' अरघा भी लगाया गया है, फिर भी भीड़ संभालना क्यों कठिन हो रहा है !

पवित्र शिव गंगा की सफाई के संयंत्र हमेशा क्यों नहीं चलाये जाते !

स्थानीय जनप्रतिनिधि खामोश हैं और बाबानगरी के जलस्रोत एवं मंदिर के निकट प्रसिद्ध मानसरोवर के कई हिस्सों को मिट्टी से भरा जा रहा है, जो अत्यंत ही खतरनाक परिणाम देने वाला साबित होगा.

बाबा बैद्यनाथ के भक्तों की संख्या में हर वर्ष वृद्धि हो रही है, परन्तु सरकार की ओर से की जा रही स्थाई व्यवस्था में अब भी भारी कमी है. बहुप्रतिक्षित क्यू कंम्प्लेक्स निर्माण कार्य मंथर गति से चलने के कारण अबतक पूर्ण नहीं हो पाया है, जो शायद शिवभक्तों के लिए सबसे अहम सुविधायुक्त व्यवस्था साबित होने वाली है. अभी मात्र निचली मंजिल पर ही कतार की व्यवस्था की गई है। सरकार को निर्माणाधीन क्यू कंम्प्लेक्स को पूरा करने में तेजी लाने की दिशा में जोरदार पहल करने की आवश्यकता है. जो आगे चलकर जिला प्रशासन के साथ सरकार को भी राहत की सांस देने वाला साबित होगा.

इसके अलावा दुम्मा से बाबानगरी तक स्थाई रूप से लगभग आधे दर्जन की संख्या में मिनी क्यू कंम्प्लेक्स की तर्ज पर विश्रामालय की व्यवस्था का होना समय की मांग है जिस पर सरकार को तुरंत सोचना चाहिए. इसके अलावा शहर के प्रवेश द्वार खिजुरिया से बाबा मंदिर के निकट क्यू कंम्प्लेक्स तक फ्लाईओवर की आवश्यकता भी बढ़ने लगी है. इससे शहर की यातायात व्यवस्था के साथ कांवरियों को भी शहर की सड़कों पर जहां तहां बैठने की नौबत नहीं आएगी. इससे शहरवासियों को भी आवागमन में सुविधा होगी.

बाबानगरी के जलस्त्रोत एवं मंदिर के निकट प्रसिद्ध मानसरोवर के कई हिस्सों को मिट्टी से भरा जा रहा है, जो अत्यंत ही खतरनाक परिणाम देने वाला साबित होगा. पूरे वर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं का आना जाना बाबानगरी में होता है, जिन्हें शुद्ध पेयजल के अलावा स्नानादि के लिए पर्याप्त जल की आवश्यकता है, जिसे पूरा करने में यह मानसरोवर अप्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष रूप से अहम भूमिका अदा करता है. आज भी मानसरोवर बाबा बैद्यनाथ मंदिर के आसपास बसे हजारों परिवारों, होटलों एवं विश्रामगृह के लिए अहम जलस्त्रोत है. इसे जिला प्रशासन के द्वारा भरा जाना अत्यंत ही गंभीर विषय है, स्थानीय जनप्रतिनिधि इसपर खामोश हैं .

पवित्र शिवगंगा की सफाई के लिए करोड़ों की लागत से जल शुद्धिकरण प्लांट लगाया गया है, जो विभागीय अक्षमता के कारण कभी बंद तो चालू किया जाता है. पवित्र शिवगंगा का जल स्वच्छ करना श्रद्धालुओं के लिए काफी जरूरी है, जहां स्नान कर संकल्प आदि करके ही शिवभक्त जलार्पण के लिए कतार में जाते हैं, देखा गया हे कि शिवगंगा का पानी गंदा रहने के कारण कई श्रद्धालु अन्यत्र स्नान की तलाश करते हैं .

श्रावणी मेला के शुरू होने के कुछ दिन पूर्व जिला प्रशासन के अलावा स्थानीय लोग सक्रिय हो जाते हैं, परन्तु इन मूल आवश्यकताओं के प्रति यहां के जनप्रतिनिधि बिल्कुल ही उदासीन रहे हैं और आज भी हैं. सांसद निशिकांत दुबे की विशेष पहल पर क्यू कंम्प्लेक्स का शिलान्यास किया गया जो आज एक आशा की किरण है, वरना जितने भी विधायक व मंत्री यहां से बने हैं सिर्फ शिविरों के उद्घाटन के फीते काटने में ही बहादुरी समझते रहे हैं .

बाबानगरी देवघर में नवनिर्मित रेलवे मॉडल स्टेशन बने 7 साल हो गए परन्तु यहां से बहुप्रतिक्षित नियमित ट्रेनें जो हावड़ा, पटना, भागलपुर एवं सुलतानगंज के लिए पैसेंजर व इंटरसिटी एक्सप्रेस चालू करने की मांग लंबित है. जल्द ही प्रशासन और सरकार को इन विषयों पर सोचना होगा.

सबका साथ,सबका विकास

स्वतंत्रता दिवस

के मौके पर पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र के निवासियों सहित पूरे देश की जनता को

हार्दिक शुभकामनाएं.

निवेदक

मिस्फीका, भाजपा नेत्री सह मुखिया, ईलामी पंचायत, पाकुड़

{ सफलता बेमिसाल...

{ सफलता बेमिसाल...

चाणक्य NAKYA
STUDY CENTER

जेपीएससी एग्जाम में अपार सफलता

हमारे प्रति विद्यार्थियों का विश्वास है
जिसे हम हमेशा कायम रखना चाहते हैं.

चाणक्या के 500 प्रतियोगी सफल

- दारोगा बहाली में बेहतरीन सफलता
- वनरक्षी, एसएससी, राजस्व कर्मचारी, पंचायत सचिव तथा आईआरबी उम्मीदवारों के लिए विशेष बैच.

श्रवण कुमार सिंह
निदेशक , चाणक्या स्टडी सेंटर, रांची

Address

Lalpur, Near Hariom Tower, Reliance Fresh, Ranchi

SUMAN®
PRINTS
फूल सी खिली रहे...
सपनों में बनी रहे...
सुमन साड़ियां...
12/2 Sovaram Bysack Street, 1st Floor, Kolkata-700007, Near Jain Medical, kalakar Street
Phone : 4602 0607, 2259 2230, 93398 85530 (M)
Email : suman_saree@hotmail.com

HR
MANAGEMENT SERVICES
नौकरी के लिए परेशान...?
बस करें एक बार कॉल।
Director
Abhinav Verma
Office Coordinator- Jaideep Chakraborty, Ravi Kumar
Office Address- Samudra Complex
Ground Floor, Lalpur, Near Bata Showroom
Ranchi- 834008
Contact no. 8521427101

2015 में ईलामी पंचायत की मुखिया

बनने के बाद पहली बार 6 मई 2016 में किसी राजनीतिक पार्टी से जुड़ी, वह थी भारतीय जनता पार्टी। फिर महिलाओं और युवाओं को पार्टी से जोड़ने की मुहिम में लग गई।

केन्द्र एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाना, महिलाओं में हुनर विकसित कर उन्हें स्वरोजगार से जोड़ना, अल्पसंख्यक मुस्लिम महिलाओं को भाजपा से जोड़ना, उन्हें बूथ का सदस्य बनाना, पार्टी के प्रसार-प्रसार का दायित्व देना आदि। भाजपा सरकार के द्वारा तलाक-ए-बिददत (तीन तलाक) को असंवैधानिक ठहराते हुए कानून लाने के लिए मुस्लिम महिलाओं का भारी संख्या में रुझान भाजपा की ओर किया। हमारी मंशा यही है कि हमारे युवाओं को रोजगार मिले एवं हमारी महिलाएं सामाजिक, मानसिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त एवं शिक्षित हों.

निवेदक

मिस्फीका, भाजपा नेत्री सह मुखिया, ईलामी पंचायत, पाकुड़